(मासिक)

ज्ञानामृत

वर्ष 55, अंक 7, जनवरी, 2020
मूल्य 8.50 रुपये, वार्षिक शुल्क 100 रुपये

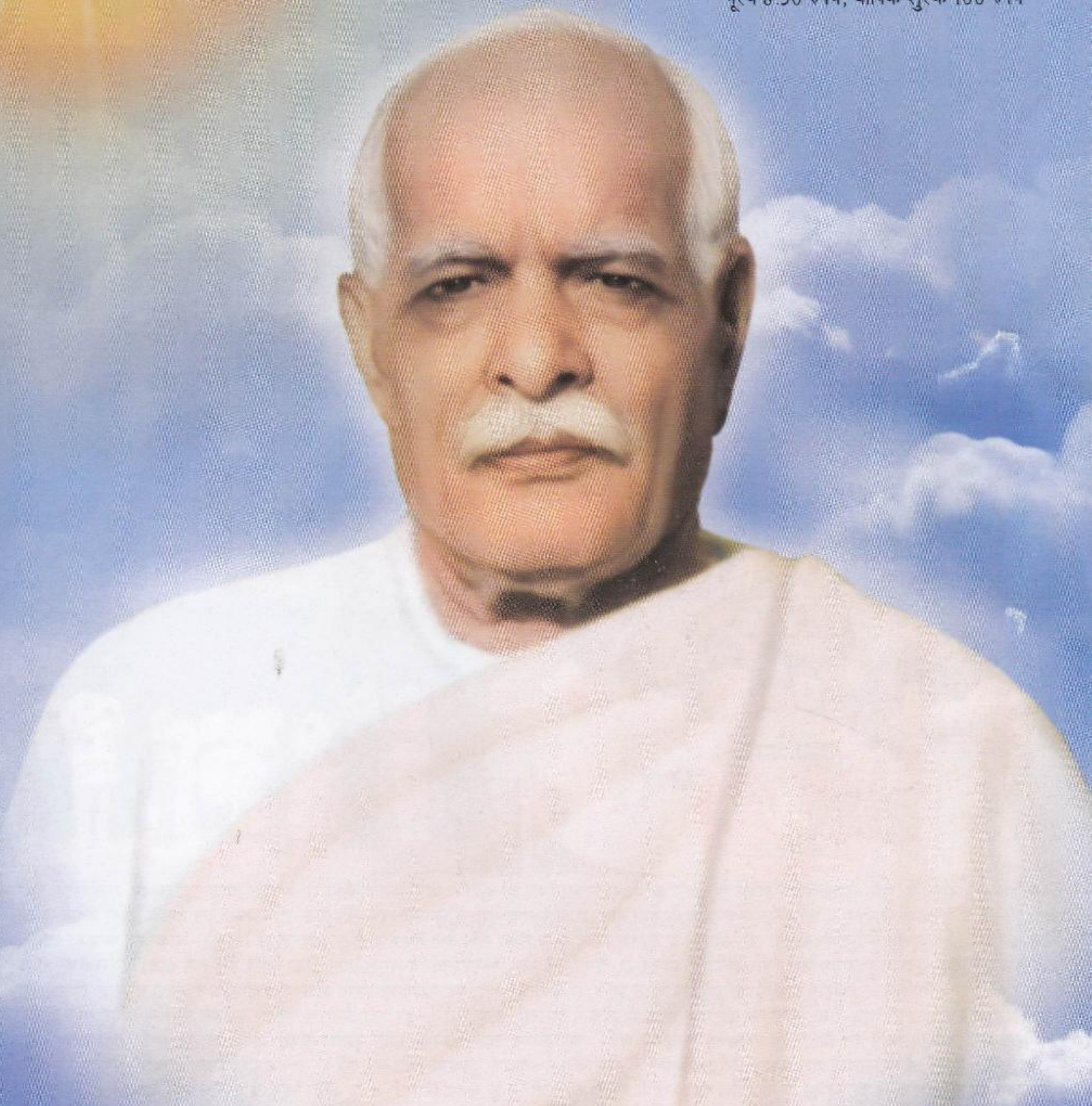

पिताश्री प्रजापिता ब्रह्मा
स्मृति दिवस विशेषांक

1

2

3

4

5

6

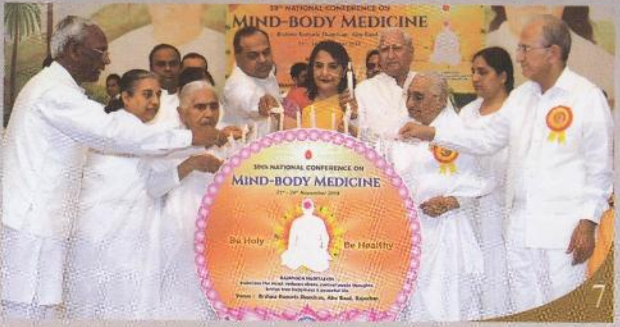

7

8

1.कटक- 'गाडस् पॉवर फॉर गोल्डन एज' विषयक कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए आन्ध्र प्रदेश के राज्यपाल महामहिम भ्राता विश्वभूषण हरिचन्दन, राजयोगिनी दादी जानकी जी, ब्र.कु.कमलेश बहन, ब्र.कु.सुलोचना बहन, ब्र.कु.हंसा बहन, ब्र.कु.नथमल भाई, ब्र.कु.उषा बहन तथा अन्य। **2.ब्रह्मपुर-** प्रभु उपहार रिट्रिट सेवाकेन्द्र का उद्घाटन करते हुए राजयोगिनी दादी जानकी जी। साथ में ब्र.क.मंजू बहन, ब्र.कु.माला बहन तथा गणमान्य जन। **3.चन्द्रगढ़ी (नेपाल)-** सेवाकेन्द्र के रजत जयन्ती महोत्सव का उद्घाटन करते हुए प्रथम महिला शंकराचार्य हेमानन्द गिरि, ब्र.कु.राज बहन, नगरपालिका के प्रमुख भ्राता जीवन कुमार श्रेष्ठ तथा अन्य। **4.कुरुक्षेत्र-** श्रीमद् भगवद् गीता पर आयोजित अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठि का उद्घाटन करते हुए ब्र.कु.अमीरचंद भाई, महामंडलेश्वर स्वामी ज्ञानानंद, ब्रह्मस्वरूप ब्रह्मचारी महाराज, फिनलैंड से सिस्टर सन्ना सकोनन, मारीशस से प्रो.विश्वनाथ पाटिया, जापान से प्रो.सतो हीरोकी, ब्र.कु.सरोज बहन तथा अन्य। **5.पटना-** अखिल भारतीय श्रीमद् भगवद् गीता सम्मेलन का उद्घाटन करते हुए बिहार के महामहिम राज्यपाल भ्राता फागु चौहान, उप-मुख्यमन्त्री भ्राता सुशील कुमार मोदी, स्वास्थ्य मन्त्री भ्राता मंगल पांडे, ब्र.कु.बृजमोहन भाई, ब्र.कु.मनोरमा बहन, स्वामी गौरीशंकराचार्य जी महाराज तथा अन्य। **6.गुरुग्राम (ओ.आर.सी.)-** 'समाज परिवर्तन का आधार – महिला' विषयक कार्यक्रम का शुभारंभ करते हुए उड़ीसा के महामहिम राज्यपाल प्रो.गणेशी लाल जी, ब्र.कु.बृजमोहन भाई, ब्र.कु.आशा बहन, ब्र.कु.चक्रधारी बहन, ब्र.कु.बिन्दु बहन तथा ब्र.कु.सविता बहन। **7.शान्तिवन (आबू रोड)-** 'माइंड-बॉडी मेडिसिन' विषयक सम्मेलन का उद्घाटन करते हुए डॉ.बनारसीलाल शाह, राजयोगिनी दादी जानकी जी, हमारा समर्पण ट्रस्ट की अध्यक्षा बहन डॉ.सोनिया रावत, ब्र.कु.निर्वैर भाई, राजयोगिनी दादी रतनमोहिनी जी, डॉ.प्रताप मिड्ढ़ा तथा अन्य। **8.ज्ञान सरोवर (आबू पर्वत)-** व्यापार तथा उद्योग प्रभाग द्वारा आयोजित सम्मेलन का उद्घाटन करते हुए एस.वी.के.एम.के कुलपति डॉ.राजन सक्सेना, ब्र.कु.डॉ.निर्मला बहन, ब्र.कु.योगिनी बहन, ब्र.कु.गीता बहन, मिनिस्टर केयर ग्रुप, यू.के. की अध्यक्षा अलका बहन पटेल, महाराष्ट्र के उप-सचिव भ्राता रामचन्द्र धनावड़े तथा अन्य।

नव वर्ष के प्रति दादी जानकी जी का

शुभ संदेश

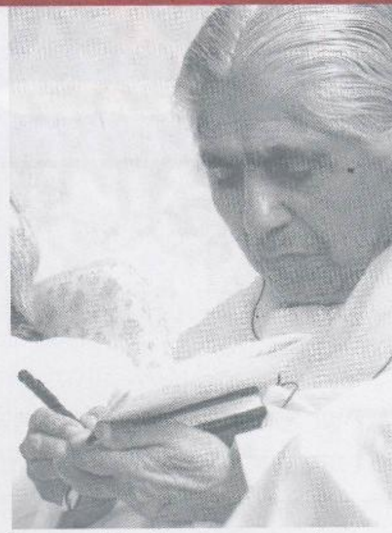

सुख-शान्ति-पवित्रता से सम्पन्न दैवी विश्व के रचयिता, परमसद्गुरु भोलेनाथ शिव के अति स्नेही, अति प्रिय सन्तान भाइयो और बहनो,

पुराने और नए वर्ष के संगम की शुभ वेला में, नवयुग की स्मृतियों को ताजा करने वाले नववर्ष की, आप सभी बेदाग हीरा बनने वालों को बहुत-बहुत बधाइयाँ हों।

संगमयुग पर हमें गुणवान बनना है। सद्गुण ही बड़े से बड़ी सम्पदा है। इसके लिए भगवान हमें जिन गुणों की धारणा के लिए प्रेरणा दे रहे हैं, वे तुरंत धारण करने हैं। गुणचोर बनना है। सबके गुण देख-देख कर अपने को श्रृंगारना है। गुणों में भी धैर्य, नम्रता, सत्यता, मधुरता – सेवा में बहुत साथ देते हैं। सबके गुण देखने से वायुमण्डल स्नेह से भरपूर हो जाता है। शुभचिंतन में रहना और सबके लिए शुभचिंतक बनना, यह बहुत सुखदाई है।

संसार में हमारा कोई दुश्मन नहीं है, सभी मित्र हैं। हरेक को बहन-भाई की दृष्टि से देखो। बहन-भाई का ये सम्बन्ध बहुत फायदे देने वाला है। मनमत न हो, सदा श्रीमत पर चलें तो हम हमेशा एकमत होकर रहेंगे। एक सेकेण्ड में शान्ति की अनुभूति में खो जाएँ। न बीती हुई बात, न आने वाली बात, कोई चिंतन नहीं। एक-दूसरे को सम्मान देना, प्रभाव में किसी के न आना, न किसी से थोड़ी भी घृणा रखना, यही सुरक्षा है।

दिल को आराम देने वाले दिलाराम भगवान की मीठी स्मृति में मन-बुद्धि को एकाग्र करते हुए सर्व पुराने भाव-स्वभाव से मुक्त हो जायें। नववर्ष में नये उमंग-उत्साह के साथ-साथ नव संस्कार धारण करें। निर्मल भावों के साथ नववर्ष का स्वागत करें। नये वर्ष में वरदानी भोलेनाथ शिव से स्वास्थ्य, समृद्धि और खुशी के वरदान के साथ-साथ 'कदम-कदम पर सफलता जन्मसिद्ध अधिकार' और 'विजयी भव' के वरदान को साकार करने की अनन्त बधाइयाँ आप सब स्वीकार करें।

सर्व भाई-बहनों को नये वर्ष और नये युग की बहुत-बहुत मुबारक हो! मुबारक हो!

आपकी दैवी बहन

बी.के.जानकी

अमृत-सूची

- शुभ सन्देश 3
- ब्रह्मा बाबा - एक बहु-आयामी व्यक्तित्व (सम्पादकीय) 4
- साकार बाबा के साथ के दिन बहुत निराले थे 7
- आध्यात्मिक शक्ति से हमारा जीवन और समाज सुखी और समृद्ध होगा 9
- पत्र सम्पादक के नाम 10
- बाबा ने कहा, बच्ची बहुत बहादुर है 11
- साकार में विश्व की सर्वोच्च आत्मा - पिताश्री ब्रह्मा 15
- नव वर्ष को बधाई (कविता) 18
- पवित्रता के वरदानी मेरे बाबा 19
- मुझे शिवबाबा ने अव्यक्त वतन में पढ़ाया 23
- प्रेम का पथ निराला 26
- बाबा ने कहा - बच्चे का वर्तमान और भविष्य दोनों महान हैं 27
- जब भक्ति को भगवान मिला 28
- सचित्र सेवा-समाचार 32

ब्रह्मा बाबा
एक बहु-आयामी व्यक्तित्व

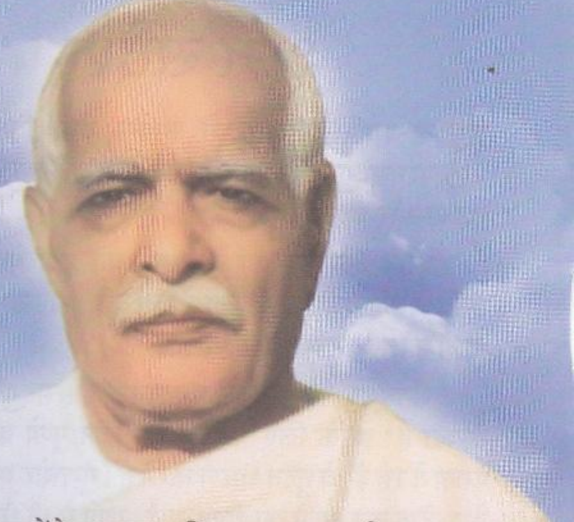

ब्रह्मा बाबा एक बहु-आयामी व्यक्ति थे। सबसे पहली और सबसे प्रमुख बात तो यह है कि वे नैतिकता के विशाल विग्रह थे। उन्होंने लोक-मत के दबाव में आकर या किसी भी आर्थिक कारणवश अपने किसी भी नैतिक सिद्धांत का उल्लंघन नहीं किया। वे उत्कृष्ट बौद्धिक समग्रता तथा अद्वितीय नैतिक श्रेष्ठता से सम्पन्न व्यक्ति थे। आध्यात्मिक उत्कर्ष और मानसिक धृति की दृष्टि से वे योगाचार के एक जीते-जागते उदाहरण थे।

योग्य प्रशासक, दूरदर्शी योजनाकार तथा महान द्रष्टा

वे मात्र एक सुधारक नहीं थे बल्कि एक महान प्रशासक भी थे, जिनकी प्रशासन-प्रणाली मनुष्यों के प्रति प्रेम और सम्मान पर आधारित थी। वे मानव-जाति की सेवा से अभिप्रेरित थे और दिव्य गति से परिपूर्णता प्राप्त करना उनका लक्ष्य था।

वे बुद्धिमान तथा दूरदर्शी आत्मज्ञ थे। उनके पास विलक्षण दृष्टि थी। अपने समय से बहुत आगे की ओर देखकर उन्होंने ब्रह्माकुमारी संस्था को एक ईश्वरीय विश्व विद्यालय का रूप दिया और उसे एक आत्म-निर्भर तथा स्वावलंबी प्रणाली बना दिया।

वे पूर्वानुमान कर सकते थे कि कौन-सी आत्मायें भविष्य में किस भूमिका का निर्वाह कर सकती हैं इसलिए दशकों पूर्व उन्होंने उनकी देखभाल करने और उन्हें मार्गदर्शन देने का कार्य आरंभ कर दिया ताकि उन्हें बड़े सामाजिक उत्तरदायित्वों के लिए तैयार किया जा सके।

उन्होंने अल्पकालिक, मध्यकालिक तथा दीर्घकालिक आधार पर संस्था के विकास की योजना बनाई। उस समय जबकि संस्था के विरुद्ध उग्र विरोध था, उन्होंने मानसिक रूप से यह देख लिया था कि भविष्य में संस्था के अनुयायियों की संख्या अकल्पनीय रूप से बढ़ेगी इसलिए उन्होंने उन्हें उन परिस्थितियों के लिए अद्वितीय पूर्व दृष्टि के साथ प्रशिक्षित किया। उनकी पूर्व दृष्टि और उनके आयोजन तथा मार्गदर्शन के कारण ही संस्था का इतना विस्तार हुआ और इतनी प्रतिष्ठा प्राप्त हुई जितनी कि आज हम देखते हैं तथा प्रथम, द्वितीय तथा अनुवर्ती पंक्तियों के समर्पित कार्यकर्त्ताओं की एक विशाल मंडली का निर्माण हुआ।

शिवबाबा की दर्शन-प्रणाली तथा आचार के सर्वोत्तम व्याख्याता

स्वयं को और विश्व को बेहतर ढंग से और सही ढंग से समझने में उन्होंने जो योगदान किया वह उनके गुणों का द्योतक है। यद्यपि स्वयं उन्हें औपचारिक विश्वविद्यालय की शिक्षा प्राप्त नहीं हुई थी तथापि बौद्धिक दृष्टि से वे एक असाधारण पुरुष थे, जो कि एक अद्वितीय विश्व विद्यालय की स्थापना के लिए दैवी साधन बने। वे न केवल अधिमानसिकी की जटिलताओं और सूक्ष्मताओं में पारंगत थे, न केवल उनके पास अलौकिक

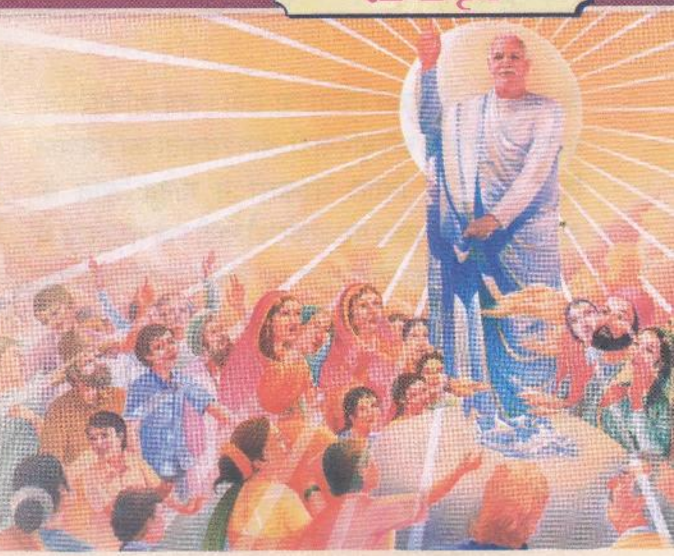

विज्ञानों की गहरी पैठ थी, न केवल उन्हें आध्यात्मिक आचारों की नई-नई ऊँचाइयों का ज्ञान था बल्कि वे अद्भुत सादगी और दुर्लभ कुशलता के साथ इन सिद्धांतों को क्रियान्वित कर सकते थे। इस प्रकार वे शिव बाबा के सच्चे व्याख्याकार थे और शिवबाबा के मन, वचन और कर्म आदि के सर्वोत्तम व्याख्याता थे।

संभाषण की दुर्लभ प्रतिभा

उनकी अभिव्यक्ति की शैली अत्यंत गूढ़ विषय को भी सरल बना देती थी। उन्हें विभिन्न लोगों को विभिन्न स्तरों पर संभाषण करने की दुर्लभ प्रतिभा प्राप्त थी। वे बच्चों को भी उतनी ही आसानी से सिखा सकते थे जितनी आसानी से वे स्नातकोत्तर कक्षाओं के छात्रों को सिखा सकते थे। वे साधारण लोगों से लेकर विद्वानों तक सभी को समान रूप से इतने प्रभावी ढंग से संबोधित कर सकते थे कि उनके मन आलोकित हो उठते थे। वे गहन विचार, दृढ़ विश्वास, सर्वोपरि प्रयोजन की ईमानदारी की अपनी शक्ति और व्यवहार की निष्ठा, मनुष्यों को समझने की गहराई और प्रेमपूर्ण स्वभाव के जरिये लोगों के दिलों में अपनी बात बिठा देते थे। ऐसे अनेक उदाहरण हैं कि अनेक पुरुषों और महिलाओं ने गहरे मानसिक संताप की अवस्था में बाबा के दर्शन किये और बाबा के वचनों तथा कार्यों से उन हताश और निराश लोगों को राहत मिली। ऐसे भी अनेक उदाहरण हैं कि विद्वान व्यक्ति जटिल प्रश्नों को लेकर बाबा के पास आये और बाबा के संक्षिप्त तथा स्पष्ट उत्तरों ने उनकी मनोग्रंथियों को खोलकर उनका रूपान्तरण कर दिया। बाबा के शब्दों में एक विशेष जादू था और वह दिन दूर नहीं है जब उनकी स्पष्ट प्रेरक वाणी को गहन आध्यात्मिक ज्ञान की अभिव्यक्ति माना जायेगा।

स्नेहमय व्यक्तित्व तथा अथक कार्यकर्त्ता

उनमें न केवल उच्च प्रज्ञा थी बल्कि व्यक्तित्व के वे सभी गुण थे जो कि किसी व्यक्ति को सभी बच्चों, पुरुषों, महिलाओं और युवकों का स्नेही बना देते हैं। जो भी लोग उनसे मिलते थे, उन्हें ऐसा लगता था कि वे बाबा के सर्वाधिक प्रिय पात्र हैं। इसलिए लोगों के हृदय में बाबा के प्रति अतिशय अनुराग उत्पन्न हो गया था। इस प्रकार बाबा का हृदय सर्वाधिक प्रेममय था। वे मानवता के सच्चे प्रेमी थे और उनके हृदय में पीड़ित लोगों के प्रति संवेदना थी। इसी कारण वे दिन में उन्नीस घंटे अथक कार्य करते थे। मानव-जाति की पीड़ा के निवारण के कार्य के प्रति उनके हृदय में इतना उत्साह था कि मानसिक तथा आध्यात्मिक ऊर्जा से युक्त उनके गतिमान व्यक्तित्व के लिए आयु बाधक नहीं थी। जीवन के अन्तिम वर्षों में पहाड़ों की सुखद शान्ति का आनंद उठाना उन्हें पसन्द नहीं था। उनके हृदय में तो नब्बे वर्ष की आयु में भी मनुष्य को बुराई से मुक्त करने के कार्य में गहराई से और बिना थके लगे रहने की लगन थी, जो कि उनके भौतिक अस्तित्व के अंतिम क्षण तक बनी रही।

एक अद्वितीय स्वतंत्रता-संग्राम के पथ-प्रदर्शक

स्वतंत्रता के इतिहास में बाबा ने जो कुछ किया वह अनुपम है। जब दूसरे लोग विदेशी शासन से मुक्त होने के लिए संघर्ष कर रहे थे तब वे शिवबाबा के नेतृत्व में मानव-जाति को उसकी सात सुविदित बुराइयों से मुक्त करने की दिशा में सचेष्ट थे। इसलिए अज्ञान से ग्रस्त लोगों से परिपूर्ण इस विश्व में उन्होंने ईश्वरीय ज्ञान का प्रसार किया। उन्होंने भारत-माताओं की एक आध्यात्मिक सेना की स्थापना की ताकि लोगों को माया

के लोहपाश से मुक्त किया जा सके। जब शक्तिशाली बुराइयों ने शान्ति की बुनियादी आवश्यकता का दम घोट दिया था, जब विगत संस्कारों ने मानव-जाति के आध्यात्मिक स्वास्थ्य पर अपने फौलादी पंजे गड़ा रखे थे और भ्रष्टाचार का बोलबाला था, तब वे सच्ची स्वतंत्रता के लिए अथक कार्य कर रहे थे। उन्होंने प्रत्येक आकांक्षी की दिव्य चिनगारी को अधिक चमक और आभा दी। उन्होंने मनुष्य को यह बोध दिया कि वह ईश्वर की सन्तान है और वह जितना स्वयं को जानता है उससे कहीं अधिक बड़ा है। उन्होंने मनुष्य को बहुत प्रेरित किया और शुद्धता के मार्ग पर चलाया।

वे यह जानते थे कि मदिरापान, धूम्रपान तथा अश्लील फिल्में देखने की आदत ने गरीब किसानों, युवकों और जन-साधारण का कितना विनाश किया है। इसलिए उन्होंने इन आदतों की साफ-साफ शब्दों में निंदा की और लोगों को ये आदतें छोड़ने के लिए प्रेरित किया।

आध्यात्मिक रूपांतरण के कार्य में वे विश्राम लेना नहीं जानते थे। उनकी आत्मा न तो वृद्धावस्था को जानती थी और न थकान को जानती थी क्योंकि उन्हें गहरे, अटल विश्वास रूपी कूप निर्झरों से शक्ति मिलती थी। नब्बे वर्ष की आयु में भी वे अप्रतिहत उत्साह के साथ अपना कार्य करते रहे।

इच्छा की दृढ़ता

वे अपने संकल्प क्रियान्वित करने में बहुत दृढ़ थे। कोई भी व्यक्ति उन्हें उनके संकल्प से डिगा नहीं सकता था और न लोक-कर्त्तव्य के उनके बोध को विदीर्ण कर सकता था। जब उन्होंने पूर्ण शुद्धता का झण्डा उठाया तो लोगों ने एकजुट होकर उनका विरोध किया, हर तरह के रास्ते अपनाए, जनता को भड़काया और विधान सभा के सदस्यों के जरिए बाबा पर दबाव डाला। यहाँ तक कि हिंसक कार्यवाही करने की धमकी भी दी। किन्तु बाबा की इच्छा-शक्ति अडिग थी और वे सभी तूफानों के आगे अविचल रहे। कुछ लोगों ने शुद्धता की ईश्वरीय पुकार को सुना और बाबा के पास आये और कुछ अन्य लोग, जो कि पहले-पहल बाबा के साथ थे, बाद में सार्वजनिक विरोध के भय से बाबा से दूर हो गये किन्तु तूफानों और लहरों के थपेड़ों के बावजूद बाबा हमेशा शिवबाबा की सलाह, अपने साहसपूर्ण संकल्प और अपनी निर्मल चेतना की आवाज के सहारे आगे बढ़ते रहे। बाबा के प्रधान गुणों में से एक गुण था उनकी सादगी और त्याग की भावना, जो कि एक आदर्श बन गयी है। अनेक लोगों के मन पर उनका आधिपत्य था।

लाखों लोगों के जीवन पर उन्नत प्रभाव

यह बात बहुत महत्वपूर्ण है कि उन्होंने थोड़े से ही समय में अनेक लोगों के जीवन को रूपांतरित कर दिया। जिन लोगों को आंतरिक बदलाव की कोई आशा नहीं थी उन्हें उनसे एक ऐसी शक्ति मिली जिसके जरिए उनका आध्यात्मिक रूपांतरण आसान हो गया। उनका आध्यात्मिक तथा नियामक प्रभाव ऐसा था कि अनेक लोग पूर्ण शुद्धता के लक्ष्य की ओर बढ़ सके तथा कामवासना और अन्य बुराइयों को त्याग सके। सौम्य आग्रह, शान्त युक्ति, स्वाभाविक प्रेम आदि के जरिए वे अनेक लोगों पर अपना आध्यात्मिक प्रभाव अंकित कर सके इसलिए आज संस्था के पास समर्पित आध्यात्मिक कार्यकर्त्ताओं की बड़ी विशाल सेना है। इनमें अधिकांशत: बहनें और मातायें हैं जिन्होंने बाबा की प्रेरणा से त्याग करने का साहस किया और ईश्वरीय ज्ञान का मार्ग अपनाया। सम्पूर्ण विश्व में लाखों पुरुषों और महिलाओं को बाबा से प्रेम है और वे बाबा के अनुयायी हैं। इससे यह प्रकट होता है कि लोग बाबा का कितना आदर करते हैं। वस्तुत: विश्व के इतिहास में किसी भी अन्य व्यक्ति ने बाबा की अवस्था में और इतनी विकट परिस्थितियों में इतनी कोशिश नहीं की, इतना साहस नहीं किया, इतना परिश्रम नहीं किया, इतना प्रेम नहीं किया। इस लेख में बाबा के कार्यों और दिव्यता का सीमित परिचय ही दिया गया है। ■■■

साकार बाबा के साथ के दिन बहुत निराले थे

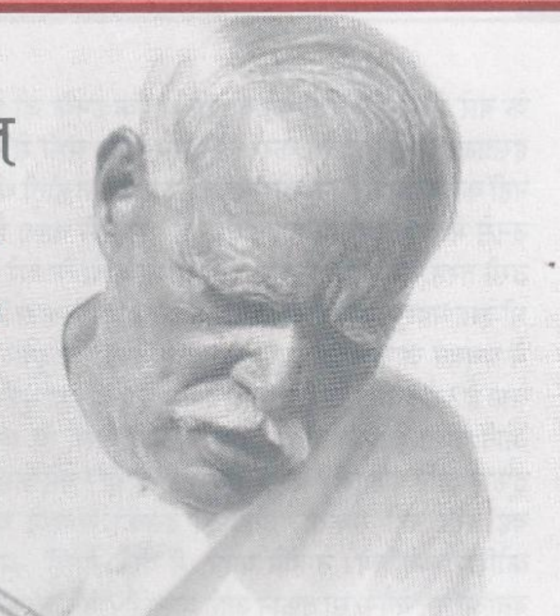

मैं जब भी बाबा को देखता हूँ, मुझे बहुत-बहुत घनिष्टता महसूस होती है। उनका मुझसे इतना गहरा प्यार है जिसका कोई वर्णन नहीं। मेरा भी उनसे गहरा प्यार है, उसका मैं भी वर्णन कर नहीं सकता। जब बाबा के सामने खड़ा होता हूँ, यह मुझे अनुभव होता है। साकार में बाबा अमृतवेले दो बजे उठ जाते थे। मैं भी दो बजे उठ जाता था और लाइट जला देता था। मेरे कमरे की लाइट जली हुई बाबा देखते थे या और कोई देखकर बता देते तो बाबा पहरे वालों से कहते थे, लाइट जल रही है, अगर जगदीश बच्चा उठा है तो उसको बुला लो। उस समय बाबा को कोई ज्ञान का बिन्दु याद आता था या कोई सेवा की प्रेरणा होती थी तो बाबा के सामने कोई न कोई चाहिए जिसको बताये। अगर कोई न होता तो बाबा नोट कर लेते थे। एक-दो बार मुझे ऐसे बाबा का बुलावा आया। पहरे वाले ने कहा, बाबा आपको याद फरमा रहे हैं। मैं चला जाता था। फिर हमेशा यह कोशिश की कि मैं भी दो-ढाई बजे नहाकर तैयार रहूँ। बाबा के पास जाऊँ और नहाया हुआ न हूँ, यह नहीं होना चाहिए। बाबा के पास नहाकर जाना चाहिए। हमेशा मैं नयी दुल्हन की तरह तैयार होकर बाबा के पास जाता था। बाबा मुझे बुलाते थे। क्या बात करते थे, बात मत पूछिये! बाबा कभी कटोरी में या कप में दूध पी रहे होते, मुझे भी पिला देते थे। कभी कुछ, कभी कुछ खिलाते या पिलाते थे। छोटे बच्चे को जैसे उसका दादा या बाबा प्यार करता है, वैसे मुझे अपने पास बिठाकर सुबह-सुबह प्यार देते थे। सारा विश्व सुबह-सुबह भगवान को याद कर रहा है लेकिन भगवान सुबह-सुबह मुझे याद कर रहा है और कहता है, जगदीश बच्चे को बुला लो। कभी भी बाबा ने मुझे डाँटा नहीं। ऐसे भी नहीं कहा कि जगदीश को बुला लो। बाबा हमेशा कहते रहे, 'बच्चे से कहो, बाबा याद फरमा रहे हैं।' कभी बाबा ने मुझे ये नहीं कहा कि यह काम करो, वह काम करो। बाबा कहते थे, बच्चे, यह काम करोगे? हमेशा बाबा मुझे ऐसे ही कहते थे। आश्चर्य की बात है, इतने छोटे-से अकिंचन (नाचीज) व्यक्ति को बाबा का आदर देखिये! इससे लगता है कि उनमें कितनी महानता है! देखिये! इतनी बड़ी हस्ती, मुझसे कहते थे, बच्चे, यह करोगे? जब ऐसे बाबा आपसे कहेंगे तो आप करना क्या, जान भी दे देंगे। सारी दुनिया एक तरफ, कितने भी विघ्न आयें, अगर आपका ऐसा हुकम है, आदेश है तो अवश्य करेंगे। कुछ भी हो जाये, हम करेंगे। हमेशा मेरा और बाबा का इस प्रकार का सम्बन्ध रहा।

बाबा का बोलने का तरीका, व्यवहार क्या रॉयल था! बाबा कमाल के थे। सारे चित्र मेरे सामने आते हैं। मेरे सामने शिवबाबा भी है, ब्रह्मा बाबा भी है, बापदादा है। जब वे आये हुए होते, दोनों ने मुझे बहुत आशीर्वाद दिया। बहुत दिया है, बहुत ही दिया है।

साकार बाबा के अव्यक्त होने के बीस दिन पहले से ही मुझे लगा कि बाबा अव्यक्त होने वाले हैं। मुझे शुरू से ऐसी टचिंग होती थी कि यह आत्मा जाने वाली है। दीदी

के बारे में भी मैंने बड़ों को बताया था कि इनके जो भी हस्ताक्षर कराने हों तो करा लो। सब-कुछ सभी से तो नहीं कह सकते। जिनसे मेरी खुलकर बातचीत होती थी, उनसे मैं कहता रहा कि इनका पार्ट पूरा होने वाला है। उसी तरह जब मैं कमला नगर में था तो बाबा के बारे में भी ऐसा महसूस होने लगा। मैंने गुलजार दादी से कहा कि मैं मधुबन जाना चाहता हूँ। मुझे पूछने लगी, मधुबन में क्या है? मैंने कहा, संस्था के इतिहास में एक बड़ा तूफान आने वाला है। कहती थी, तूफान आने वाला है! क्या तूफान आने वाला है? कैसी बातें कर रहे हो? मैंने कहा, यह बता नहीं सकता, आप ही इसको समझने की कोशिश कीजिये। उन्होंने कहा, मैं कैसे समझूँ, आप बताओ ना, कौन-सा तूफान आने वाला है? मैंने कहा, मैं नहीं बता सकता। थोड़े समय के बाद उन्होंने कहा, ठीक है, मैंने समझ लिया। उनको भी अच्छी तरह टचिंग होती थी लेकिन वे मेरे मुँह से सुनना चाहती थीं। फिर मैंने कहा, मैं मधुबन जाना चाहता हूँ। उन्होंने कहा, जाओ।

मैं आया बाबा के पास। उन दिनों, बाबा ज्यादातर कुटिया में बैठते थे। मैं पाँच-छह दिन रहा होऊँगा, सौ प्रतिशत मुझे निश्चय हो गया कि बाबा की यह अव्यक्त होने की स्टेज है, बाबा जा रहे हैं। बिल्कुल पक्का। बाबा को लगा कि यह समझ गया है, इसको भगाओ यहाँ से। यह औरों से न कहे। बाबा ने मेरे से पूछा, बच्चे, तुम कितने दिन यहाँ रहोगे? अभी रिफ्रेश तो हो गये, दिल्ली में काम नहीं है क्या? जाओ फलानी, फलानी किताब छपाओ। अभी वो किताब छपवायी नहीं है, बच्चे माँगते हैं। 'महान अन्तर' नामक किताब जिसमें आत्मायें क्या कहती हैं और परमात्मा क्या कहता है, वह छपवाओ जाके। मैंने कहा, बाबा उसको छपवाने में कोई दिक्कत नहीं है, मैं छपवा दूँगा। मुझे यहाँ रहने की इच्छा है, और कुछ दिन मुझे यहाँ रहने दीजिये। बाबा ने कहा, नहीं, नहीं, जाओ। उन पुस्तकों को बाँटना है हमको। मैंने कहा, बाबा, उस पुस्तक को कम बाँटना है क्योंकि लोग कहते हैं, झगड़ा होता है। बाबा ने कहा, कौन कहता है, उसका नाम बताओ। मैं नाम कैसे बताऊँ? मैं कोशिश कर रहा था कि मुझे ना भेजें। बाबा कह रहे हैं तुम जाओ। आखिर बाबा के आगे मुझे मानना ही पड़ा, मैं चला गया। रास्ते में, स्टेशन पर सारा समय यह अन्दर खाता रहा कि मैंने यह क्या किया! यह जानते हुए कि बाबा जा रहे हैं, मेरे प्रियतम जा रहे हैं, मैं उनको छोड़कर आ गया! धिक्कार है मुझे। मैं इतना भी कुछ नहीं कह सका, अपनी बात नहीं मनवा सका। जिद्द ही कर लेता कि बाबा अभी मैं नहीं जाता, रोने लग जाता, कुछ कर लेता! मुझे आना नहीं चाहिए था। स्टेशन पर बार-बार संकल्प आ रहा था कि टिकट कैन्सल कराऊँ, वापिस ऊपर जाऊँ, टिकट कैन्सल कराऊँ, ऊपर जाऊँ, दिल्ली नहीं जाऊँ। लेकिन जाना ही था क्योंकि बाबा की आज्ञा थी। गाड़ी आ गयी, मैं चला आया।

आपमें से कोई ने दिल्ली कमला नगर का सेन्टर देखा होगा। एक तरफ मेरा कमरा था, दूसरी तरफ गुलजार दादी का कमरा था और बीच में और एक कमरा था जहाँ टेलिफोन रखा रहता था। उसकी तार लंबी लगाई हुई थी। उनको चाहिए तो वे अपने कमरे में कर लेते थे और मुझे चाहिए तो मैं उसको अपने कमरे में कर लेता था। उस रात को जब हम सोने लगे, टेलिफोन मैंने अपने कमरे में लाकर रख दिया। रात को फोन आया। मैंने नहीं उठाया। मुझे पता था कि यह वही फोन है। बहुत समय तक घंटी बजती रही लेकिन मैंने नहीं उठाया। गुलजार बहन सोचने लगी कि यह फोन क्यों नहीं उठा रहा है। वह भागती हुई आयीं अपने कमरे से, आकर फोन उठाया। वह दादी जी का टेलिफोन था। दादी जी ने बाबा के अव्यक्त होने का समाचार दिया, फिर गुलजार बहन ने टेलिफोन मुझे दिया। दादी जी ने मेरे से बात की और सुबह हम वहाँ से निकले मधुबन के लिए।

बाबा के साथ जब मैं बैठता था तो समाधी अवस्था में ही बैठता था। बाबा सारा समय कुटिया में ऐसे नहीं बैठते थे जैसे पत्र लिखता हुआ फोटो है, जिसमें तकिये के सहारे बैठे हैं। नहीं, हमेशा ऐसे नहीं बैठते थे। सीधा ही बैठते थे। उन दिनों में तो मधुबन में ज्यादा लोग नहीं होते थे, 30-40 ही होते थे। बाबा बात तो मेरे से ही ज्यादा करते थे। बाबा से मिलने के लिए मुझे काफी समय मिल जाता था। जब मैं उनके सामने बैठता था, आनन्द ही आनन्द! वो स्थिति होती थी, वो अनुभव होता था। इसलिए मधुबन से जाने का मन नहीं करता था। साकार बाबा के साथ के वे दिन बहुत निराले ही थे। ■■■

आध्यात्मिक शक्ति से हमारा जीवन और समाज सुखी और समृद्ध होगा

-- श्री राम नाथ कोविन्द,
भारत के माननीय राष्ट्रपति

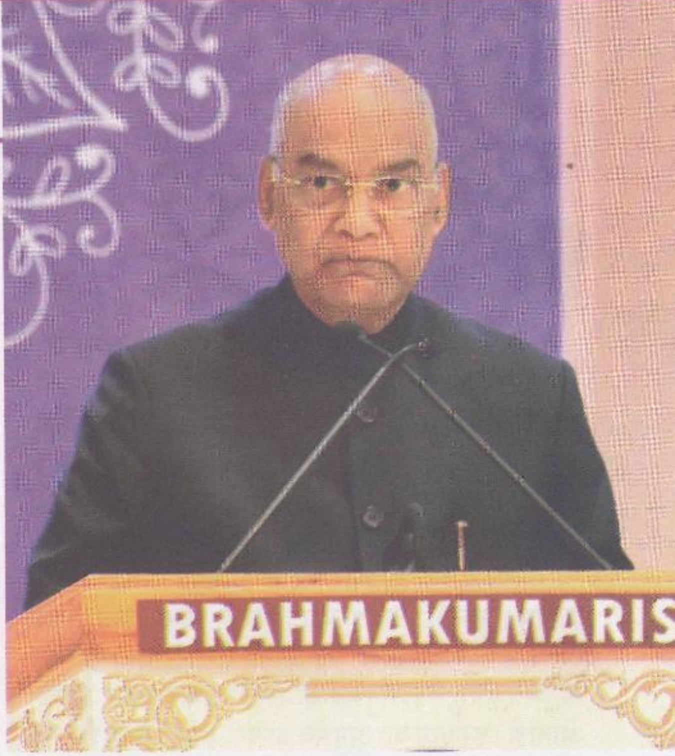

भारत के राष्ट्रपति माननीय श्री राम नाथ कोविन्द जी इस महासम्मेन को सम्बोधित करते हुए कहा कि दादी जी ने हम सभी को सच्चाई, सफाई और सादगी रखने का जो महामन्त्र दिया है यदि उसको जीवन में अपना लिया जाय तो इससे जीवन और समाज की समस्याओं का समाधान सम्भव हो जायेगा। पूरा विश्व शान्ति की खोज कर रहा है। मानव जन्म से मृत्यु तक शान्ति की खोज करता है फिर भी शान्ति नहीं प्राप्त हो पाती है। शान्ति पद, वस्तु, सम्बन्ध से प्राप्त नहीं हो पाती है। शान्ति मन के अनुभव करने की चीज है। उपासना और पूजा पद्धति शान्ति का पहला चरण है। यदि जीवन में नैतिकता और मूल्यों का विकास हुआ है तो वह शान्ति के प्रथम चरण के विकास का प्रमाण है। दूसरा चरण है - अध्यात्म। समदृष्टि और समभाव उत्पन्न होने पर समझना चाहिए कि हम अध्यात्म के सही पथ पर चल रहे हैं। पिताश्री ब्रह्मा बाबा ने आजीवन मनुष्य रूपी हीरे को तराशने का कार्य करते रहे जिससे एक सतयुगी सृष्टि का निर्माण हो सके। राष्ट्रपति जी ने कहा कि वे परम आदरणीया दादी जानकी जी का आशीर्वाद प्राप्त करके स्वयं को गौरवान्वित और भाग्यशाली महसूस कर रहे हैं।

उन्होंने ब्रह्माकुमारी शिवानी बहन की प्रशंसा करते हुए कहा कि वे सम्बन्धों में मानवीय वृत्ति को तार्किक और एक नये दृष्टिकोण से विश्लेषण करके समाज को एक नई राह दिखा रही हैं। महिलाओं को समाज में आगे बढ़ाकर ही सामाजिक परिवर्तन सम्भव है। उन्होंने कहा कि बाबा साहब भीमराव अम्बेडकर जी ने महिलाओं को सम्मान दिलाने के लिए मन्त्रीमण्डल से त्यागपत्र दे दिया था। उन्होंने लोगों से आह्वान किया कि वे नारियों के प्रति अत्याचार और भेदभाव की समाप्ति के लिए आगे आयें। उन्होंने कहा कि एक शिक्षित महिला की संतान कभी अशिक्षित नहीं हो सकती है। समाज के समग्र विकास के लिए जनधन योजना, कौशल विकास इत्यादि योजनायें बहुत लाभकारी सिद्ध हुई हैं। वर्तमान संसद में 78 महिला सांसदों का चुना जाना यह समाज के लिए बहुत ही सुखद संकेत है। नारियों के प्रति सम्मान और सुरक्षा की भावना उत्पन्न करना हम सबकी जिम्मेदारी है। हमें जानकारी पाकर यह अत्यन्त खुशी हो रही है कि ब्रह्माकुमारीज़ संस्था ने पूरे विश्व में भारत का गौरव बढ़ाया है। उन्होंने आशा व्यक्त की कि आध्यात्मिक शक्ति से हमारा जीवन और समाज सुखी और समृद्ध होगा। ■■■

पत्र सम्पादक के नाम

सितम्बर, 2019 का 'आनन्दमय जीवन के सूत्र' लेख पढ़कर बहुत खुशी हुई। अनेक नई बातों की जानकारी मिली। पाँच तत्वों की कमी की पूर्ति किस प्रकार करते हैं, यह लेखिका बहन ने बहुत ही अच्छे तरीके से बताया है। शान्ति की कमी की पूर्ति किस प्रकार करनी है, यह भी बहुत अच्छे ढंग से समझाया है। 'परमात्मा से भय या प्यार' लेख भी बहुत अच्छा लगा। ज्ञानामृत के सभी लेख प्रेरणादायक हैं। बाबा अपने बच्चों को कैसे मदद करता है, यह आँखों से तो दिखता नहीं पर अनुभव होता है। अनुभव के लेख पढ़कर बहुत आनंद आता है। हर एक का अनुभव अलग-अलग होता है।

ब्र.कु.सरस्वती क्यासा, बीदर (कर्नाटक)

मैं चालीस साल से 'ज्ञानामृत' पत्रिका का अध्ययन कर रहा हूँ। यह पत्रिका आध्यात्मिक ज्ञान का भण्डार है। इसमें प्रकाशित उच्च कोटि के शिक्षाप्रद, प्रेरणादायी लेख मन को शान्ति प्रदान करते हैं। इससे बौद्धिक विकास के साथ समाज में धार्मिक एवं सामाजिक समरसता को बढ़ावा मिलता है। 'ज्ञानामृत' युवा पीढ़ी का सही मार्गदर्शन करने वाली पत्रिका है। इसके नियमित अध्ययन से मानसिक बीमारियाँ दूर होती हैं साथ ही विकारों पर विजय पा सकते हैं। पत्रिका में शुद्ध हिन्दी भाषा का प्रयोग होता है। इसमें प्रकाशित लेखों से राष्ट्रभाषा के प्रसार-प्रचार में योगदान मिल रहा है। मेरे विद्यालय के विद्यार्थी भी 'ओम शान्ति' स्लोगन के साथ इसका अध्ययन करते हैं। 'ज्ञानामृत पत्रिका' की सामग्री, संकलन, मुद्रण, प्रकाशन एवं प्रेषण में लगे सभी भाई-बहनों का बहुत-बहुत आभार।

उदयसिंह राठौड़, प्रधानाध्यापक, कागड़ी, जिला पाली (राज.)

नवम्बर, 2019 अंक में ब्र.कु.उर्मिला बहन जी का लेख 'वारिस कौन' समाज की वास्तविक स्थिति को दर्शाता है। यह लेख मन को छू गया। आज समाज में पुत्र (वारिस) की लालसा में कन्या भ्रूण हत्या को जन्म मिला है। लेख में दिए गए उदाहरण जैसे विवेकानंद, महात्मा गांधी, मदर टेरेसा, दादी प्रकाशमणि आदि काफी अच्छे लगे। परमपिता परमात्मा को याद कर अपनी आत्मा को पावन बना कर किए जाने वाले पुण्य कर्म ही हमारे सच्चे वारिस हैं।

ब्र.कु.प्रशांत, आगरा, उत्तर प्रदेश

ज्ञानामृत के नवम्बर, 2019 अंक का सम्पादकीय लेख दिल को छूने वाला एवं प्रेरणादायी है। आदरणीया जानकी दादी जी से पूछे गए प्रश्न 'बाबा परमधाम में अपने बच्चों को पहचानेगा क्या?' इस के जवाब में दादी जी ने कहा है कि बाबा का कहना मानने वाले, लाइट रहने वाले, माइट खींचने वाले बच्चे को बाबा जरूर पहचानेगा। दादी जी ने हमें तीव्र पुरुषार्थ के लिए प्रेरित किया है। आदरणीया दादी जी का दिल से धन्यवाद। पत्रिका के जिस दूसरे लेख ने मुझे एक सुकून दिया है वह है ब्र.कु.उर्मिला बहन द्वारा रचित 'वारिस कौन?' इसमें उन्होंने समाज में व्याप्त एक सोच कि बेटा ही वारिस बन सकता है और बेटे से ही वंश चलता है को नकार दिया है। मैं स्वयं दो गुणवान एवं संस्कारी पुत्रियों की माँ हूँ और मेरा यह संकल्प है कि मेरा अंतिम संस्कार उन्हीं के हाथों हो किन्तु उक्त लेख ने मेरे इस संकल्प से भी ऊपर उठकर, हमारे स्वयं के शुभ कर्मों और संस्कारों को ही हमारा वारिस बनाया है। लेख को पढ़ने के बाद चिन्तन चला कि वाकई इन्सान के जाने के बाद, उसके शुभ कर्मों की वजह से ही उसे याद किया जाता है। अतः प्रथमतः असली वारिस हमारा व्यवहार ही है उसके पश्चात् हमारी औलाद। आदरणीया दीदीजी आपका दिल से धन्यवाद।

ब्र.कु.प्रीति खत्री, मालवीया नगर, जयपुर

बाबा ने कहा,
बच्ची बहुत बहादुर है

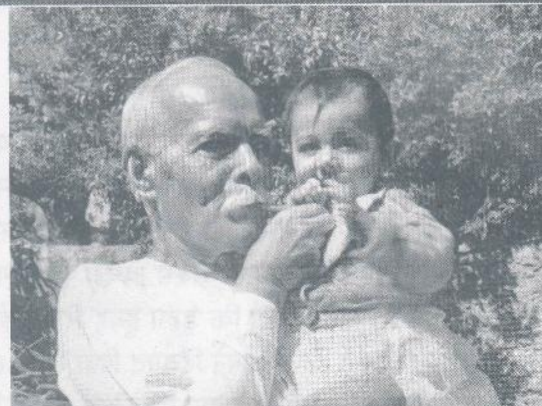

■ ■ ■ ब्रह्माकुमारी चन्द्रू बहन, सेनफ्राँसिसको

एक बार साकार बाबा मुम्बई में एक घर में ठहरे थे। मैंने जैसे ही उस घर में पाँव रखा, सामने बाबा को देखा और पहली दृष्टि में ही निश्चय हो गया कि ये मेरे पिता हैं। उस समय मेरे शरीर की आयु 12 या 13 वर्ष थी और अचानक ही लौकिक पिता ने शरीर छोड़ा था। मन में इस बात का दुख था। साथ-साथ प्रश्न भी थे कि मृत्यु क्या है, जन्म क्या है, आत्मा क्या है, मृत्यु के बाद कहाँ जाते हैं, गए हुए से हम कभी दुबारा मिल नहीं पाते हैं आदि-आदि। यह दुख मेरी लौकिक माता जी को भी था क्योंकि उनकी आयु छोटी थी। पड़ोस की बहनें उन्हें ब्रह्माकुमारी बहनों के सत्संग में ले गई थी। माता जी ने लौटकर मुझे बताया कि बहुत अच्छी बहनें हैं ब्रह्माकुमारियाँ, बहुत अच्छा ज्ञान सुनाती हैं, तुमको भी इन बहनों जैसा बनना है। मैंने कहा, माताजी, अपनी सम्भाल करना। आप जवान हैं, धनवान हैं, कोई साधू बाबा आपको ले न जाए। उस छोटी आयु में भी मैंने अपनी माँ को यह सलाह दे डाली थी। माताजी ने कहा, नहीं, नहीं, ऐसी कोई बात नहीं है, तुम भी चलो। रविवार का दिन था। मैं भी माताजी के साथ गई। जाते ही सामने बाबा को देखा। मन में जो पिता के अभाव का खालीपन था, वह बाबा को देखते ही भर गया। बाबा लम्बे थे, सीधे खड़े होते थे, सुन्दर थे और बहुत मीठी दृष्टि से देखते थे। उनके सामने सफेद वस्त्रधारी बहुत माताएँ-बहनें फर्श पर बैठी थीं। बाबा की तरफ सभी की दृष्टि थी। यह दृश्य देख मेरे मन में सहज ही विचार उठा कि मुझे भी ऐसा बनना है।

कभी छी-छी नहीं बनना

क्लास के बाद बाबा अपने कमरे में गए। क्लास में हम कई नई-नई कुमारियाँ बैठी थीं। निमित्त बहनों के मन में आया, इस सब कुमारियों को बाबा से मिलाना चाहिए। वे हमें बाबा के कमरे में ले गईं। बाबा लेटे हुए थे और हम सब कुमारियाँ उनके आस-पास खड़ी हो गईं। बाबा दृष्टि देने लगे। मुझे दृष्टि लेने का ज्ञान तो नहीं था परन्तु बाबा का प्रभाव इतना था कि मैं देखती ही रह गई। बाबा ने दृष्टि देते हुए हरेक कुमारी को कुछ न कुछ वरदान दिया। जब मेरी बारी आई तो बाबा ने कहा, बच्ची, कभी छी-छी नहीं बनना। मुझे उस समय मालूम नहीं था कि छी-छी क्या होता है परन्तु बाद में समझ में आया कि कुमारी का विकारों में जाना ही छी-छी बनना है। बाबा की मीठी शिक्षा थी कि बच्चे, निर्विकारी होकर ही रहना। बाबा से वरदान लेकर हम सब कुमारियाँ वापस अपने-अपने घर आ गईं।

अच्छा लगा सृष्टि-ड्रामा का ज्ञान

इसके बाद मैंने सात दिन का कोर्स किया और कोर्स के दौरान – आत्मा, परमात्मा, मृत्यु, जन्म – ये सब बातें जानने को मिलीं। इससे जन्म-पुनर्जन्म सम्बन्धी मेरे सभी प्रश्न हल हो गए। सबसे अच्छा पाठ लगा ड्रामा का। उसमें बताया गया कि ड्रामा हूबहू रिपीट होता है। मुझे खुशी हुई कि मैं अपने दिवंगत पिता से 5000 वर्ष बाद फिर से मिल पाऊँगी। मन में जो दुख था कि पिता से कभी भी मिल ही नहीं पाऊँगी, ड्रामा के ज्ञान से वह दूर हो गया। इस प्रकार, बाबा की डायरेक्ट दृष्टि से मेरा दिव्य जन्म हुआ इसलिए मैं बहुत नशे से अपने को ब्रह्माकुमारी के बजाए ब्रह्मापुत्री कहती हूँ।

लाल अक्षर आए हैं

बाबा, मम्मा मुम्बई आते रहते थे। हम सवेरे-सवेरे बस में बैठकर मुरली सुनने जाते थे। बाबा का प्यार मुम्बई के बच्चों से ज्यादा ही था। दादी प्रकाशमणि, दादी पुष्पशान्ता, दादी शीलइन्द्रा, दादी बृजइन्द्रा, ब्र.कु.निर्वैर भाई आदि सब उस समय मुम्बई के विभिन्न सेवाकेन्द्रों पर रहते थे। हमारे में ज्ञान की गहराई नहीं थी परन्तु सेवाकेन्द्र का वातावरण और दादियों की पालना इतनी शक्तिशाली थी कि हम छोटी-छोटी कुमारियाँ दादियों के पीछे-पीछे घूमती थीं। दादियाँ कहती थीं, रोटी बेलो; तो वो हम करते थे अर्थात् वो जो कहते, हम करते थे। दादियों का आपस में बहुत ज्यादा स्नेह था। मधुबन से बाबा के पत्र रोज वहाँ आते थे। बाबा लाल पेन्सिल से लिखते थे। दिन में स्कूल की पढ़ाई पढ़कर, शाम को हम सेवाकेन्द्र पर जाते थे तब दादी प्रकाशमणि हम कन्याओं को कहती थी, चलो, चलो, लाल अक्षर आए हैं। हम सब इकट्ठे हो जाते थे और दादी जी पत्र पढ़कर सुनाती थी। फिर उसी समय दादी जी बाबा को पत्रोत्तर लिखती थी और फिर किसी भाई को वह पत्र देकर स्टेशन भेजती थी। पत्र पर ज्यादा डाक टिकट लगाकर पोस्ट किया जाता था जिससे वह उसी दिन आबू पहुँच जाता था। उस जमाने में यज्ञ में इतना धन नहीं था फिर भी अधिक डाक टिकट का धन खर्च करके भी दादी बाबा को पत्र लिखती थी। बाबा का फिर अगले दिन उत्तर आ जाता था। बाबा का पत्र सुनकर आत्मा में खुशी का ज्वार आ जाता था।

स्वतः अनुशासन

कुछ समय बाद हम दादियों के साथ मधुबन (माउंट आबू) आए। तब छोटा-सा पाण्डव भवन था, बाबा का कमरा था, झोपड़ी थी और हिस्ट्री हाल नया-नया बना था। लकड़ियों से पानी गर्म होता था। गर्म पानी बाल्टियों में भरकर स्नान के लिए ले जाते थे। जल्दी-जल्दी तैयार होते थे, मन में होता था, बाबा क्लास में आ जाएँगे, कहीं देर ना हो जाए। किसी की हिम्मत नहीं होती थी कि बाबा के आने के बाद क्लास में दाखिल हो जाए। बाबा के संदली पर बैठ जाने के बाद यदि कोई क्लास में आता था तो हाल में प्रवेश न करके खिड़कियों के पीछे बैठ जाता था और वहाँ से बाबा को देखता और मुरली सुनता था। बाबा मना नहीं करते थे अन्दर आने से परन्तु बच्चों में स्वतः ही ऐसा अनुशासन था। बाबा जब देखते थे कि खिड़की के पीछे बच्चे बैठे हैं तो बाबा कहते थे, आओ बच्चे, अन्दर आओ, ऐसे कहकर अन्दर बुला लेते थे। फिर वे अन्दर बैठकर मुरली सुनते थे। तो यह बाबा का प्यार था बच्चों प्रति।

ब्रह्मा बाबा के साथ ब्रह्मा-भोजन

हर गुरुवार को ब्रह्मा भोजन होता था। हम सभी भाई-बहनें लाइनों में नीचे बैठकर ही भोजन करते थे। बाबा भी नीचे बैठते थे। बहनें बाबा को परोसती थीं। हमारी निमित्त बहनों ने हमें सिखाया था कि ब्रह्मा-भोजन भी करना है और बाबा की दृष्टि भी लेनी है। हम तो बच्चे थे, सोचते थे, भोजन भी करना है, दृष्टि भी लेनी, दोनों काम कैसे करें, भूख भी लगी होती थी। बड़े मजे का अनुभव होता था। ब्रह्मा-भोजन, ब्रह्मा बाबा के साथ करना, कम बात है क्या? हम सोचते थे, दोनों कामों में से एक भी रह न जाए। भोजन साधारण होता था। कांसे की थाली होती थी। हम अपनी थाली अपने हाथों से धोते थे।

आध्यात्मिक पढ़ाई में है सर्व रोगों का निदान

ब्रह्मा-भोजन के बाद दादी हम सभी को बाबा से मिलाने ले गई जहाँ हमारे जीवन का परिवर्तन हुआ। बाबा ने मुझे दृष्टि दी और फिर पूछा, बच्ची, क्या कर रही हो? मैंने कहा, बाबा, पढ़ रही हूँ। बाबा ने पूछा, क्या पढ़ रही हो? मैंने कहा, बाबा, साइन्स कालेज में पढ़ रही हूँ। बाबा ने पूछा, अच्छा क्या बनेगी? मैंने कहा, बाबा, डॉक्टर बनूँगी। उस जमाने में कुमारियों का एक बड़ा सपना होता था डॉक्टर बनने का और हमारे लौकिक घर में प्रथा थी कि 16 साल की होते ही कुमारी की शादी करा देते थे। शादी से बचने का एक ही उपाय था कि यदि डॉक्टरी पढ़ूँ तो इस बन्धन से बची रहूँगी। फिर बाबा ने कहा, अच्छा डॉक्टर बनेगी? मैंने कहा, जी बाबा। इसके बाद बाबा ने पूछा, क्या कोई ऐसी दवा है जिसे एक बार लें और सदाकाल के लिए ठीक हो जाएँ? इसके उत्तर में मैंने कुछ बोला नहीं। बाबा के साथ बात तो वहाँ पूरी हो गई परन्तु बाबा के इस अन्तिम प्रश्न से मेरे भीतर विचार-मंथन होने लगा मानो इस प्रश्न ने मन के शान्त समुद्र में लहरें खड़ी कर दीं। मैं विचार करने लगी कि इतने डॉक्टर हैं, इतनी दवाइयाँ हैं, फिर भी रोग बढ़ते ही जा रहे हैं। मेरा लक्ष्य था कि गाँव में जाएँगे, डॉक्टर बनकर वहाँ ग्रामीणों की सेवा करेंगे परन्तु यह होता नहीं है। उस आयु में भी मैं यह समझ पा रही थी कि सोचा हुआ होता नहीं है। अमेरिका जाना, एम.डी.बनना, कमाई करना – ये सब आकर्षण सेवा-भाव पर भारी पड़ते हैं। सारी रात बाबा के कथन पर मेरा चिन्तन चलता रहा। मैंने सोचा, जिस्मानी डॉक्टर तो दुनिया में बहुत हैं परन्तु बाबा के रूहानी डॉक्टर कितने हैं? बहुत कम, तो क्यों न हम यह बन जाएँ। बाबा ने तो मुझे डायरेक्ट कुछ नहीं कहा था परन्तु मुझे निश्चय हो गया कि आध्यात्मिक पढ़ाई में ही सर्व रोगों का निदान छिपा है।

आबू से मुम्बई लौटने के बाद जब मैं अपने कॉलेज में गई तो देखा कि वहाँ परीक्षाएँ चल रही हैं। मैं घर वापस आ गई। माताजी भी ज्ञान में चल रहे थे, उन्होंने वापस आने का कारण पूछा। मैंने कहा, मुझे नहीं पढ़ना है। मैं क्लास में हमेशा प्रथम आती थी। माताजी ने कहा, पढ़ना नहीं है तो बाबा क्या कहेंगे? पढ़ेंगी नहीं तो भाषण कैसे करेंगी, इंग्लिश कैसे बोलेंगी, देश-विदेश कैसे जाएँगी? मैंने कहा, बाबा ने कहा है। बाबा ने तो मुझे कुछ नहीं कहा था, हाँ, मेरे अन्दर ऐसी सोच का बीज डाल दिया था। माताजी को बाबा पर इतना निश्चय था कि उन्होंने कहा, ठीक है, बाबा ने कहा है तो बाबा अपने आप पढ़ाएँगे, सिखाएँगे।

बच्ची को सेवार्थ देश-विदेश भेजेंगे

इसके बाद मैंने ब्रह्माकुमारी जीवन में ढलना प्रारम्भ कर दिया। सफेद साड़ी पहनना, नियमित क्लास करना, सेवाकेन्द्र पर सेवाओं में सहयोग देना, ये सब मैं करने लगी। कुछ समय बाद पुनः मधुबन जाना हुआ। बाबा से मिले। बाबा तो त्रिकालदर्शी हैं, हमारे तीनों कालों को जानते हैं। बाबा ने मेरी माताजी को कहा, बाबा बच्ची को देश-विदेश में सेवार्थ भेजेंगे और बच्ची बाबा का नाम रोशन करेगी। उस जमाने में विदेश में बाबा के सेवाकेन्द्र थे ही नहीं। विदेशों में कोई एक-दो बाबा के बच्चे थे। मैंने सोचा, खुश करने के लिए बाबा ऐसे कह रहे हैं। परन्तु, मैं यह भी जानती हूँ कि बाबा ने कभी भी व्यक्तिगत मुलाकात में या मुरली में कोई भी शब्द बढ़ा-चढ़ा कर या मनोरंजन के उद्देश्य से प्रयोग नहीं किया है। खुश करने के लिए कुछ नहीं बोला है। जो सच है, वही बोला है। उस समय बाबा ने कहा था, सभी धर्मों के लोग आएँगे, सब देशों के लोग आएँगे, आज यह हो रहा है। हर बात का समय होता है। उस समय मधुबन में 30 लोग रहते थे। दो सौ लोगों की सिजन बड़ी मानी जाती थी। आज 25000 की बड़ी मानी जा रही है। कितनी भाषाओं में बाबा की मुरली का अनुवाद होता है। जपनीज, चाइनीज, कोरियन – हर भाषा में मुरली अनुदित है। न्यूजीलैंड हम गए थे। यह महाद्वीप का अन्तिम छोर है। वहाँ क्राइस्ट चर्च नाम से एक शहर है। उसके बाद कोई दुनिया ही नहीं है। एन्टार्कटिका है, बर्फ का साम्राज्य है। वहाँ अन्जान

लोगों को हम दृष्टि दे रहे थे, बाबा का परिचय दे रहे थे। हमने कहा, बाबा, इससे आगे कहाँ जायेंगे? फिर अलास्का गए। वहाँ एस्किमो आ गए। बाबा के ज्ञान का सब सामान जैसे कि कैसेट (तब कैसेट चलती थी) आदि ले गए, बोले, अपने रेडियो पर हम इनको चलाएँगे। तो बाबा का हर वरदान साकार होता आया है।

बाबा जहाँ भेजे, तैयार हो?

साकार बाबा के अव्यक्त होने के बाद दादी जी ने मुझे विदेश भेजा। कहाँ जाना है, कुछ भी नहीं पूछना होता था। इतना कहा जाता था कि पासपोर्ट पर साइन कर दो। अव्यक्त बापदादा ने भी मुझसे पूछा, तैयार हो? मैंने कहा, जी बाबा। बाबा ने कहा, बैग, बैगेज की बाबा बात नहीं कर रहे हैं। बाबा जहाँ भेजे, जिसके साथ भेजे, जिसके साथ बिठाए, जहाँ बिठाए, तैयार हो? मैंने कहा, जी बाबा। यह वरदान डायरी में लिख लिया। जब भिन्न-भिन्न संग मिले तो वह डायरी निकाली, लिखा हुआ वायदा पढ़ा। हिम्मत आ गई। कहते हैं, तुम मात-पिता हम बालक तेरे। इसे स्वीकार करने की ताकत ज्ञान से आती है। फिर कोई भिन्नता नहीं रहती है। एकता आ जाती है। हम सभी को गले लगा सकते हैं। बाबा ने सहज पाठ पढ़ाया, सभी आपके भाई-बहनें हैं। जब इसे स्वीकार कर लेते हैं तो एक सुन्दर संसार बन जाता है। मेरा सौभाग्य है कि इतने सालों की विदेश सेवा के दौरान मैं हर देश की बहनों के साथ रही हूँ। चाइनीज, जपनीज, फिलिपिनो, स्पेनिश, जर्मन, फ्रैन्च, पोर्चुगीज, इंग्लिश, मराठी, सिन्धी, पंजाबी आदि अनेक पृष्ठभूमि वाली बहनों का संग मिला है। केवल दो दिन नहीं, कई-कई साल तक, अनजान स्थानों पर हम साथ रहे हैं।

बाबा ने एक वरदान में मुझे कहा, बच्ची बहुत बहादुर है। वास्तव में, 45 से ज्यादा देशों में अकेले-अकेले सेवा की है। एक बार पाण्डव भवन में दो कुमारियाँ आई थीं। मुम्बई जाने वाली थीं। उनको अकेले तो बाबा नहीं भेजना चाहते थे। बाबा ने कहा, उस बहादुर बच्ची को बुलाओ। मेरे को बुलाया गया। बाबा ने कहा, इनको मुम्बई लेकर जाओ। रात की ट्रेन थी। हम तीनों ट्रेन में चढ़ गए। अब नींद भी आए, बच्चियों का ध्यान भी रखना था। मैं कोई इतनी बड़ी तो नहीं थी। उन दिनों ट्रेन में बिस्तर होता था। बिस्तर की डोरी सभी सूटकेश में बाँधी, उन दोनों कुमारियों के हाथों में बाँधी और फिर अपने हाथ में भी बाँधी ताकि रात में सूटकेश या बच्चियों के साथ कुछ घटना घटे तो मैं जाग जाऊँ।

दादा सत्य था

टोरन्टो में एक बार एक भाई बस में मिला। मुझसे पूछने लगा, क्या आप ब्रह्माकुमारी हैं? मैंने कहा, हाँ। फिर कहता है, दादा लेखराज सत्य था। मैंने पूछा, क्यों, क्या हुआ? तो कहता है, मैं भी उस समय कराची में छोटा लड़का था। मैंने भी बाबा के विरोध में सब विरोधियों के साथ मिलकर पत्थर आदि फेंके थे। मुझे लगता था कि दादा कुछ गलत कर रहे हैं। इतने सालों के बाद आप टोरन्टो में पहुँचे हो, माना दादा का ज्ञान यहाँ पहुँचा है, इसका अर्थ है बाबा सत्य था।

लाइट का हाथ

चौदह जनवरी, 1969 को मैं मधुबन में थी। ठण्ड बहुत थी। बाबा भोजन के बाद अपने कमरे के पास खड़े थे। मैं भी वहाँ खड़ी थी। कोई भी होता था तो बाबा हाथ पकड़ कर थोड़ा पैदल करते थे। बाबा ने मेरा हाथ पकड़ा और कुछ कदम चले। बहुत हवा चल रही थी। फिर बाबा ने कहा, अन्दर चलो बच्ची, ठण्ड बहुत है। वो जो बाबा का हाथ पकड़ा, ऐसा लगा कि माँस, हड्डी का हाथ नहीं है, लाइट का हाथ है। हमें उस समय ज्ञान नहीं था कि अव्यक्त क्या होता है। पन्द्रह जनवरी को हम मुम्बई सेवाकेन्द्र पर लौट आए और क्लास में अनुभव सुनाया कि बाबा तो लाइट हो गए हैं। बाबा के शरीर में तो हड्डियाँ हैं ही नहीं, लाइट ही लाइट है। इसके तीन दिन बाद ही बाबा अव्यक्त हो गए। इस प्रकार दधिचि ऋषि के समान बाबा ने अपनी हड्डी-हड्डी सेवा में गला दी। ■■■

साकार में विश्व की सर्वोच्च आत्मा – पिताश्री ब्रह्मा

■■■ ब्रह्माकुमारी चन्द्रिका बहन, अहमदाबाद

सन् 1965 की बात है, एक दिन ब्रह्ममुहूर्त में करीब 3.30 बजे मैं कुर्सी पर बैठी थी, ईश्वर-चिन्तन में ही मगन थी। तभी मैंने सफेद प्रकाश की काया वाले व्यक्ति में लाल प्रकाश को प्रवेश करते देखा। कुछ ही सेकेण्ड के बाद वह आकर्षक स्वरूप मेरे निकट आया। मेरे सिर पर हाथ रखा और कहा, बच्ची, मैं भारत में आया हूँ, तुम मुझे ढूँढ़ लो। बहुत ही स्पष्ट रूप से दो बार यह आवाज मैंने सुनी और तभी से लेकर मैं कई सत्संगों में, धर्मगुरुओं, धर्म-उपदेशकों और धर्म-प्रचारकों के पास जाने लगी कि जिन्हें ध्यानावस्था में देखा था वह मुझे जरूर कभी साकार में मिल जायेंगे। काफी सत्संगों में जाने के बावजूद भी मुझे उस दिव्य पुरुष का दर्शन नहीं हुआ।

यही है, यही है, यही है

कुछ मास के बाद हमारे घर के नजदीक ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय की ओर से साप्ताहिक कोर्स का आयोजन हुआ। हमें भी उसमें जाने का निमंत्रण मिला। जो निमंत्रण देने आये थे उन्होंने कहा कि यहाँ आप जैसी छोटी-छोटी बहनें स्वयं भगवान से मिलाने का दावा करती हैं, आप जरूर आइये। हमारे आसपास वाले सभी लोगों को यह मालूम था कि हम काफी भक्ति करते हैं। उन्हों का निमंत्रण सुनकर मेरे माता-पिता सहित पूरे परिवार ने तो सात दिन जाने का फैसला कर लिया लेकिन मैंने इन्कार कर दिया और कहा कि भगवान के नाम पर आजकल ऐसे बहुत निकल पड़े हैं, मेरा अभी किसी में विश्वास नहीं रहा, न ही मुझे भगवान की प्राप्ति के लिए अब कोई कोशिश करनी है। परिवार के सभी लोग रोज जाया करते थे लेकिन मुझे कुछ सुनाते नहीं थे। आखिरकार एक दिन पिताजी ने कहा, बेटी, तुम भी चलो, तुम्हें बहुत अच्छा लगेगा। उस दिन मैं पिता जी के साथ गयी। कल्पवृक्ष का पाठ चल रहा था। मैंने चित्र में ब्रह्मा बाबा की तस्वीर देखी और सुना कि परमात्मा शिव इनके तन से गीता-ज्ञान दे रहे हैं। इस बात को सुनते ही मुझे कुछ महीने पहले ध्यानावस्था में देखा गया वो दृश्य याद आ गया और मेरे दिल से आवाज निकली कि यही है, यही है, यही है, जिस छवि को मैं इतने दिनों से तलाश रही थी।

मुझे यहाँ ही रहना है

मैं सात दिन का कोर्स पूरा नहीं कर पायी। केवल कल्पवृक्ष और तीन लोक के बारे में ही सुना। इसी बीच में गुरुवार को अहमदाबाद के पालड़ी सेवाकेन्द्र पर मेरा जाना हुआ (तब अहमदाबाद में एक ही सेवाकेन्द्र था, वह मकान अभी बदली हो गया है)। मुझे खुली आँखों से योगाभ्यास करने के बारे में कुछ भी मालूम नहीं था लेकिन मेरी लौकिक बड़ी बहन रंजन (वर्तमान समय अफ्रीका में ईश्वरीय सेवा कर रही वेदान्ती बहन) ने मुझे बताया कि योग में आँखें खुली रखना, सामने जो बहन बैठी है उनकी आँखों से आँख मिलाना और अन्दर से बोलना कि मैं आत्मा हूँ....मैं प्रकाश स्वरूप हूँ....। मैं सामने बैठी बहन को देखते-देखते कुछ ही क्षणों में ध्यान में चली गयी। मैंने ध्यानावस्था में फिर ब्रह्मा बाबा को देखा। मैं उनके गले लग गयी। बाबा ने भी कहा, आ गयी बच्ची! मैंने कहा, जी बाबा। फिर तो मुझे नयी सतयुगी दुनिया के स्वयंवर, रास-मण्डल, गोप-गोपियाँ आदि के साक्षात्कार हुए। काफी समय वतन में ही बहलती रही।

फिर बाबा ने कहा, बच्ची, अब तुम जाओ। मैंने कहा, बाबा, मुझे तो यहाँ ही रहना है, और कहीं नहीं जाना है। बाबा ने कहा, बच्ची, यह तो सूक्ष्मवतन है, तुम यहाँ नहीं रह सकती, तुम्हें तो जाकर बाबा की बहुत सेवा करनी है। मैं बाबा की बातों से ज्यादा अपनी बात को लिये बैठी थी कि नहीं बाबा, मुझे तो यहाँ ही रहना है, ध्यानावस्था में ही मेरा रोना शुरू हो गया। मैं बहुत रो रही थी। तब बाबा ने कहा, बच्ची, बाबा तुमसे वायदा करता है कि जब भी तुम बाबा को दिल से याद करोगी, बाबा तुम्हें अपने पास वतन में बुला लेगा। फिर तो रोज सुबह पाँच बजे जैसेकि वतन में बाबा के पास जाने का नियम ही बन गया। मैंने वतन में बाबा के पास ही साप्ताहिक कोर्स किया। साकार में मुरली सुनने के पहले मैंने वतन में बाबा से कई मुरलियाँ सुनीं। देखिए, जब बाबा साकार में थे तो भी आलमाइटी बाबा ने ब्रह्मा बाबा के आकारी स्वरूप से बच्चों की कितनी सेवा और पालना की।

साकारी फरिश्ते से प्रथम मिलन

साक्षात्कार के करीब छह मास के बाद मेरा माउण्ट आबू में जाना हुआ। ब्रह्मा बाबा से साकार में मिलते हुए मैंने बहुत खुशी के साथ अपने अनुभव बाबा के सामने वर्णन किये। मैंने कहा, बाबा, आपने मुझे अपना साक्षात्कार कराया था। तब बाबा ने बड़ी विनम्रता के साथ कहा, बच्ची, हो सकता है शिव बाबा ने साक्षात्कार कराया होगा, इस बाबा को कुछ भी मालूम नहीं है। बाबा के उस उत्तर को सुनकर मुझे ऐसा लगा कि ब्रह्मा बाबा जानते हुए भी अनजान बन रहे हैं और कहते हैं कि कराने वाला शिव बाबा ही है। तब मेरी उम्र केवल 18 साल ही थी और मैं स्नातक के अन्तिम वर्ष में पढ़ रही थी। बाबा ने मुझे कहा कि बच्ची, इस जन्म की सारी कर्म-कहानी बाप को बता दो। मैंने अपनी पूरी जीवन-कहानी बाबा को सुनायी। छोटे से छोटी गलती भी याद करके बाबा को अपना पूरा पोतामेल दिया। उसे सुनने के बाद बाबा ने मुझे वरदान दिया कि बच्ची, तुम्हारे द्वारा बहुत बड़े-बड़े लोगों की सेवा होगी। इस वरदान को मैंने अपने जीवन में साकार होते हुए देखा है और जब-जब ऐसे प्रसंग आते हैं तो बाबा के द्वारा मिला हुआ यह वरदान बार-बार मुझे याद आता है और मुझे महसूस होता है कि मैंने सच्चाई से बाबा के आगे अपने जीवन की हर बात सुनायी, उसी के फलस्वरूप बाबा से मुझे यह वरदान प्राप्त हुआ।

बाबा के सामने ड्रिल की और सेल्यूट दी

जब से मैंने बाबा को देखा, मुझे पूरा निश्चय हुआ कि यह बाबा ही मेरा सर्वस्व है। तब से मैं हर कदम बाबा की आज्ञा से ही रखने लगी। कॉलेज की पढ़ाई के समय एन.सी.सी. में मेरा चयन हुआ। देहली में होने वाली 26 जनवरी की परेड के लिए मुझे एक मास ट्रेनिंग के लिए देहली जाना था तो बाबा की राय लेने के लिए मैंने अहमदाबाद से आबू आकर बाबा से पूछा, बाबा, मुझे एक मास परेड के लिए देहली जाना है और एक मास वहाँ रहना होगा तो मेरे खाने-पीने आदि की धारणा का क्या होगा? इतना सुनते ही बाबा ने मेरे से पूछा, अच्छा बच्ची, तुमको ड्रिल करना आता है क्या? आज रात्रि क्लास में बाबा को दिखाना। ऐसा कहते हुए लच्छू बहन को बुलाया और कहा, बच्चियों को पहरे वाले की नयी ड्रेस निकाल कर देना। मैं, वेदान्ती बहन और हमारी एक सखी हम तीन थे। मैं तो बहुत खुश हो गई क्योंकि शाम को बाबा को ड्रिल दिखानी थी। लच्छू बहन ने मुझे नयी तीन जोड़ी ड्रेस दी। रात्रि में बाबा की क्लास पूरी हुई और बाबा ने कहा कि अहमदाबाद से आई हुई बच्चियाँ आज ड्रिल करके दिखायेंगी। फिर तो हमने छोटे हाल में ड्रिल की और बाबा को सेल्यूट दी। बाबा ने भूरी-भूरी प्रशंसा की और कहा, तुम्हारे जैसी बच्चियाँ रूहानी ड्रिल कराना सीख जायें तो बाबा का नाम बाला हो जायेगा। हम तो बहुत खुश हुईं। रात्रि को बाबा से गुडनाइट करके सो गये। परन्तु वो सवाल का जवाब तो बाकी रह गया। सुबह हुई, मुरली क्लास के बाद फिर बाबा के पास गयी। बाबा से पूछा, बाबा, मैं दिल्ली जाऊँगी तो कहाँ रहूँगी और मेरे खान-पान का क्या होगा? बाबा मुस्कराते हुए मुझे देख रहे थे, फिर कहा, बच्ची, तुम्हारे जैसी बच्ची और एक मास का टाइम वेस्ट करेगी? बाबा नहीं चाहता कि तुम्हारा टाइम वेस्ट हो। बाबा की इस बात को सुनते ही मैंने कहा, ठीक है बाबा, आप नहीं चाहते हैं तो मैं नहीं

जाऊँगी। दो दिन के बाद बाबा ने मुझे अपने पास बुलाया और कहा, देखो बच्ची, यह कुमारका बच्ची (दादी प्रकाशमणि) टूअर पर जा रही है, तुम उसके साथ जा सकती हो? तेरा बाप छुट्टी देगा? मैंने कहा, जी बाबा। बाबा ने मेरा और वेदान्ती बहन का दादी कुमारका जी के साथ 21 दिन का टूअर प्रोग्राम बनाया और उस समय जितने भी बड़े-बड़े सेवाकेन्द्र थे जैसे जयपुर, आगरा, देहली, लखनऊ, कानपुर, भोपाल आदि वहाँ ईश्वरीय सेवा करने का सुअवसर मिला। इस प्रसंग से मुझे महसूस हुआ कि हमारे भविष्य की जानकारी बाबा के पास कितनी स्पष्ट है। अन्दर में यह खुशी भी हुई कि बाबा की आज्ञा के पालन से तथा एक छोटे-से त्याग के बदले बाबा ने कितना बड़ा सुअवसर देकर हमारे भाग्य में एक विशेष पार्ट की नूँध कर दी। मैंने दादी जी के साथ 21 दिन रहकर जो कुछ प्राप्तियाँ की वो अवर्णनीय हैं।

बाबा को बच्चियों की कमाई नहीं चाहिए

सन् 1967 में स्नातक पास होने के बाद मुझे एक जगह सर्विस के लिए इन्टरव्यू देने जाना था। मैं और वेदान्ती बहन राय लेने मधुबन गये और मैंने बाबा से पूछा कि बाबा मैं लौकिक सर्विस करूँ? इससे तन-मन-धन से यज्ञ की सेवा करूँगी। बाबा ने मेरे से पूछा, बच्ची, नौकरी करोगी तो कितना कमाओगी? 500, 1000, 1,500, 2000? कितना कमाओगी? बाबा जानता है, यह कोई तुम्हारी वैल्यू नहीं है। बाबा के कहने से हम समझ गये कि बाबा नहीं चाहता कि हम नौकरी करें। उसी घड़ी मैंने और वेदान्ती बहन ने यह फैसला कर लिया कि हम जिस्मानी सर्विस नहीं करेंगी। रूहानी सेवा में ही अपना जीवन समर्पित करेंगी।

दिल की हर धड़कन सुन लेते थे बाबा

एक बार दोपहर भोजन के बाद मैं अपने बिस्तर पर लेट गयी परन्तु मुझे नींद नहीं आयी। बार-बार संकल्प आने लगा कि यदि विश्व का मालिक भगवान ब्रह्मा तन में बैठा हुआ है तो पाँच मिनट में मुझे बुलाये, तभी मैं समझूँ कि शिवबाबा को मेरे दिल की बात पहुँचती है। सचमुच दो-तीन मिनट में ही पहरे वाले भाई ने आकर कहा कि चन्द्रिका बहन, बाबा आपको बुला रहे हैं। बाबा मुझे 'चन्द्रकला' कहकर पुकारते थे। मैं खुश होकर बाबा के पास झोपड़ी में पहुँच गयी। उस समय बाबा कुछ वत्सों के साथ बैठे थे।

साधनालीन और सेवाप्रिय

बाबा की साधना सर्वोच्च स्तर की थी। ब्रह्मा बाबा जब शिव बाबा को याद करते थे तो इतने मगन हो जाते थे कि बात मत पूछिये। एक बार बाबा अंगूर के बगीचे में कुर्सी पर बैठे हुए थे। बाबा की नजर आसमान की ओर थी। मैं बाबा के पास आकर बैठ गयी। मैंने समझा, बाबा को मालूम पड़ जायेगा और बाबा मुझसे बात करेंगे। मैं काफी समय तक बैठी रही लेकिन बाबा अपनी मस्ती में थे। फिर मैंने खड़ी होकर के बाबा की ओर देखा लेकिन बाबा मुझे नहीं देख रहे थे। आखिर मुझ में धीरज न रहा और मैंने कहा, बाबा, मैं आपसे मिलने आयी हूँ। तब बाबा ने कहा, अच्छा बच्ची, तुम कब आयी? मैंने कहा, बाबा, मैं तो कब से यहाँ बैठी हूँ। तो बाबा ने कहा, यह बाबा तो शिव बाबा को याद कर रहा था। अच्छा, बोलो बच्ची, क्या सेवा है? बाबा ने मुझे कॉलेज में जाकर सेवा करने को कहा था तो मैं भाषण तैयार करके आयी थी। मैंने बाबा को कहा, बाबा, योग के विषय पर मैंने भाषण तैयार किया है। सुनते ही बाबा ने कहा, अच्छा बच्ची, बाबा को सुनाओ। मैंने करीब 10 मिनट बाबा को अपना तैयार किया हुआ भाषण सुनाया। तब बाबा ने कहा, बच्ची, तुमने तो बहुत अच्छा भाषण तैयार किया है। ऐसे ही युक्तियुक्त समझाना चाहिए। इससे मैंने यह अनुभव किया कि बाबा अपनी साधना में लवलीन रहते हुए भी, बच्चों को योग्य सेवाधारी बनने का मार्गदर्शन समय पर देते रहे और बच्चों की सेवा में उपस्थित होते रहे।

छोटों को सम्मान

यज्ञपिता ब्रह्मा बाबा, यज्ञ के हरेक छोटे-बड़े कार्यों की देखभाल करते थे। एक बार मैं भण्डारे में बैठे-बैठे मूँगफली छील रही थी। हम कई जने थे। धीरे-धीरे करके सब चले गये। मैं अकेली सेवा कर रही थी। इतने में मैंने देखा कि मेरे पास कोई बैठा है और आवाज आयी कि बच्ची, चलो बाप तुमको मदद करने आया है। मना करने

पर भी बाबा बैठ गये और मूँगफली छीलने लगे। कुछ ही मिनटों के बाद देखा कि सभी जने धीरे-धीरे वापस आकर बैठने लगे। बाबा को देखकर सभी ने सेवा में हाथ बढ़ाया। बाबा ने किसी को कुछ कहा नहीं लेकिन स्वयं करके बच्चों को सिखलाया। एक बार बाबा आँगन में खड़े थे। मैं बाबा के पास जाकर खड़ी हो गयी। बाबा का कद तो बहुत ऊँचा था और मैं बहुत छोटी थी। जब मैंने बाबा से कुछ कहा तो बाबा एकदम काफी झुक गये और कहा, बच्ची बोलो, बाबा से क्या काम है? छोटों को भी बाबा बहुत सम्मान देते थे।

एक माह पहले ही कराया था एहसास

बाबा के अव्यक्त होने से एक मास पहले मैं पार्टी लेकर मधुबन गयी थी। जब बाबा से छुट्टी ले रही थी तो काफी समय तक बाबा ने मुझे दृष्टि दी और 'गो सून, कम सून' की टोली दी। जब बाबा से विदाई लेकर निकली तो मेरे मन में एक संकल्प बार-बार आने लगा कि मानो बाबा मुझसे कह रहे हैं, 'बच्ची, इस बाबा को, इस रूप में तुम फिर कभी नहीं मिलेंगी।' कितना रोकने के बाद भी वो संकल्प अधिक जोर से आने लगा। मुझे बहुत रोना आया कि ऐसा व्यर्थ संकल्प पता नहीं मेरे मन में क्यों आ रहा है? मैं अहमदाबाद पहुँची। जब भाई-बहनें मुझसे मधुबन का अनुभव पूछते थे तो मेरे मुख से यह बात बार-बार निकल आती थी, जिसे सुनकर लोग मेरे से नाराज होते थे कि तुम यह क्या बोल रही हो! मुझे अन्दर आ रहा था कि बाबा कहीं छोड़कर चले न जायें। ठीक एक मास के बाद 18 जनवरी, 1969 को रात्रि 9.00 बजे हमें समाचार मिला कि ब्रह्मा बाबा साकार शरीर त्याग वतन में चले गये। एक मास पूर्व बाबा ने अपनी दृष्टि से ही एहसास करा दिया था कि बाबा अब साकार में अधिक समय नहीं रहेंगे। ■■■

नव वर्ष को बधाई

■■■ ब्रह्माकुमार निर्विकार नरायन श्रीवास्तव, मिश्रिख तीर्थ (उ.प्र.)

बीत गया उन्नीस है पूरा, जिसको देते विदाई हैं।
दो हजार बीस है आया, जिसको लाख बधाई है।।
नये वर्ष के शुभारम्भ में, यही प्रतिज्ञा करनी है।
मन से, कर्म से श्रेष्ठ बनेंगे, यही धारणा रखनी है।।
माया के मुरीद बन करके, करनी नहीं ढिलाई है।
दो हजार बीस है आया, जिसको लाख बधाई है।।

जो भी रही कमी-कमजोरी, उसको तुम्हें मिटाना है।
तन-मन से जो किया है वादा, उसको तुम्हें निभाना है।।
सच्चे बच्चे कहला कर फिर करना नहीं गदाई है।
दो हजार बीस है आया, जिसको लाख बधाई है।।

मंजिल ऊँची, समय बहुत कम, पुरुषार्थ को तेज करो।
कल्प-कल्प जो करते आये, उसको पुनः रिपीट करो।।
संगम पर पक्के ब्राह्मण बन, पढ़ना रोज पढ़ाई है।
दो हजार बीस है आया, जिसको लाख बधाई है।।

बीती को अब लगा दो बिन्दी, नई-नई शुरुआत करो।
मुर्दों में भी जान डाल दे, ज्ञान की ऐसी बात करो।।
शिवबाबा की याद में रहकर, दुनिया पतित भुलाई है।
दो हजार बीस है आया, जिसको लाख बधाई है।।

सच्चे बच्चे बनते हैं, तो हर बाधा मिट जाती।
नर्कमयी दुनिया को भूलकर, स्वर्णिम दुनिया आद आती।।
परमपिता के दीवाने, लक्ष्य पे नजर टिकाई है।
दो हजार बीस है आया, जिसको लाख बधाई है।।

पवित्रता के वरदानी
मेरे बाबा

■■■ ब्रह्माकुमार सीताराम भाई, मुजफ्फरपुर (बिहार)

मेरा लौकिक जन्म बिहार राज्य के मुजफ्फरपुर जिले के एक छोटे-से गाँव में सन् 1948 में हुआ। मेरे लौकिक पिता जी की धार्मिक कार्यों में बहुत रुचि थी इसलिए हमारे दरवाजे पर प्राय: साधुजन आते रहते थे। संयुक्त परिवार में मुझसे बड़े तीन भाई थे। साधु-महात्माओं के प्रति उनको कोई आकर्षण नहीं था लेकिन मुझे साधुजन इतने अच्छे लगते थे कि वे जब तक हमारे घर पर रहते, मैं उनके निकट ही बैठा रहता था। छोटा बच्चा होने के कारण वे लोग मुझे साथ में खिलाते थे, मुझे बहुत प्यार करते थे और राम-राम रटने को कहते थे। इस प्रकार, पाँच वर्ष की उम्र से ही मैं श्रीराम का भक्त बन गया। जब सात वर्ष का हुआ तब गाँव में प्राथमिक स्कूल खुल गया और मेरी पढ़ाई शुरू हो गई। पढ़ाई पढ़ते भी ईश्वर के प्रति मेरा झुकाव बना रहता था। जैसे-जैसे बड़ा होता गया, रामायण, सुखसागर, महाभारत आदि का भी अध्ययन करने लगा। तुलनात्मक रूप से विचार करने पर मुझे श्रीराम से ज्यादा श्रीकृष्ण महान लगने लगे। मैट्रिक में आते-आते अन्य कई संप्रदायों की पुस्तकों का भी मैंने अध्ययन कर लिया था। फिर मेरी भावना श्रीकृष्ण से भी आगे निराकार शिव-शंकर के प्रति बढ़ गई। तब मैं दोनों को एक ही मानता था। जैसे-जैसे पुस्तकों का अध्ययन करता गया, ईश्वर के निराकार रूप में सर्वाधिक आस्था होती गयी।

समाज सेवा में बँटाने लगा हाथ

धार्मिक रुचि के बाद भी मैं लौकिक पढ़ाई में अच्छा था परन्तु परमात्मा के विषय में ज्यादा से ज्यादा जानने का जिज्ञासु था। सेवा की भावना बचपन से ही थी इसलिए गाँव के एक सामाजिक कार्यकर्त्ता के साथ समाजसेवा में हाथ बँटाने लगा था। जीवन का लक्ष्य अधिक से अधिक विद्या अर्जन करना व ईश्वर को सम्पूर्ण रूप से जानने का था ताकि राष्ट्र के लिए कुछ कर सकूँ। उस जमाने में बचपन में ही शादी हो जाती थी। मेरा विवाह भी जब मैं छठी कक्षा में था तभी हो गया था और सन् 1966 में एक बच्ची का जन्म भी हो गया था। फिर भी मेरी पढ़ाई में कोई बाधा नहीं थी। सन् 1967, अप्रैल के प्रथम सप्ताह में सामाजिक कार्यकर्त्ता भाई मुझे एक सत्संग में ले गए जहाँ एक श्वेत वस्त्रधारी माता जी प्रवचन कर रही थी।

मन में उठा प्रश्न

'परमात्मा को सर्वव्यापी कहना, परमात्मा पिता की ग्लानि करना है। वास्तव में परमात्मा सर्वव्यापी नहीं लेकिन सर्वज्ञ है...।' प्रवचन के इस अंश को सुनते ही मैंने हाथ खड़ा करके इस कथन पर प्रश्नचिह्न लगा दिया क्योंकि तब तक की धारणा के अनुसार, परमात्मा सर्वव्यापी के रूप में मेरे लिए मान्य था। माता जी ने प्रवचन समाप्त होने पर शंका समाधान का वचन दिया। फिर बाकी प्रवचन को मैंने धैर्य से ध्यानपूर्वक सुना।

परमात्मा के अवतरण पर हुआ पूर्ण निश्चय

इसके प्रश्चात् माता जी ने मुझे साप्ताहिक कोर्स करने को कहा तथा बताया कि सारे प्रश्नों के उत्तर उसी कोर्स में दे दिये जायेंगे। साथ ही उन्होंने परमात्मा के अवतरण की बात भी बताई। उनकी युक्तिसंगत बातें सुनकर ज्ञान को जानने की इच्छा प्रबल हो गयी और मैंने अगले दिन से साप्ताहिक कोर्स चालू करने का निश्चय

कर लिया। कोर्स के लिए उन्होंने दो शर्तें मेरे सामने रखी। एक, सात दिनों तक आहार-व्यवहार पूरा शुद्ध रखना पड़ेगा। दूसरी, कोर्स के दौरान वाद-विवाद न करके सच्चाई को तर्कसंगत रीति से समझना होगा। मैंने दोनों शर्तों का पालन किया और कोर्स पूरा होते-होते मुझे परमात्म अवतरण पर पूरा निश्चय हो गया। इसके बाद नित्य मुरली सुनना प्रारम्भ कर दिया और सभी नियमों का पालन पूर्ण रूप से करने का निश्चय कर लिया।

बाबा ने मेरे प्रति भेजा पत्र

कुछ दिनों बाद ही एक मुरली में बाबा ने कहा, 'बाबा का पक्का निश्चय बुद्धि बच्चा, बाबा को जानने के बाद, बाप से मिले बिगर न रहेगा। बाप की गोद का बच्चा बनेगा और बाप से पूरा वर्सा लेने का दृढ़ संकल्प करेगा।' इस महावाक्य को सुनते ही मैंने माता जी से प्रार्थना की कि वे मुझे बाबा के पास ले चलें। माता जी ने बताया कि कम से कम एक वर्ष पवित्रता की धारणा करने के बाद ही आप बाबा से मिल सकते हैं इसलिए साल भर इंतजार करना होगा। मैंने माता जी को कहा कि मुरली में बाबा ने तो ऐसी कोई शर्त लगायी नहीं है फिर आप मुझे क्यों रोक रही हैं? मैंने शिवबाबा और ब्रह्माबाबा दोनों को पहचान लिया है, मेरा दोनों में पूर्ण निश्चय भी है। माता जी के बार-बार समझाने पर भी मैं मानने को तैयार न हुआ। अंत में माता जी ने कहा, 'ठीक है, मैं पत्र द्वारा बाबा से पूछती हूँ, बाबा अगर बुलाये तो मुझे कोई आपत्ति नहीं है।' फिर माता जी ने माउण्ट आबू में बाबा को मेरे बारे में पत्र लिखा। उत्तर में बाबा ने बहुत प्यार भरे शब्दों में लिखा कि 'नियम तो एक वर्ष का ही है लेकिन कम से कम छह माह के बाद बच्चे अगले सीजन में आ जाना।'

कठोर परीक्षा

बाबा के उत्तर से दुख तो हुआ लेकिन बाबा की आज्ञा मान कर इस अनुमानित खुशी में रहने लगा कि छह महीने बाद ही सही, बाबा की गोद में अवश्य जाऊँगा, जन्म-जन्मान्तर की आशा अवश्य पूरी होगी, जीवन धन्य हो जाएगा। आखिर वह दिन आ ही गया लेकिन मेरी आशा की पूर्णता से पहले मुझे एक अप्रत्याशित कठोर परीक्षा का सामना करना पड़ा, जो निम्नलिखित है –

मैं जिस पार्टी के साथ मधुबन गया था उसमें चार भाई थे। निमित्त टीचर हमारी वही रानी माता जी थी। उन चार भाइयों में दैहिक उम्र के हिसाब से मैं सबसे छोटा था, ज्ञान-आयु हम सबकी बराबर थी। संयोगवश बाबा से वार्तालाप करने व बाबा की गोद में जाने का चांस मुझे उनके बाद मिला। सभी बड़ी उम्र वालों को बाबा ने गोद में लिया, टोली खिलायी लेकिन जब मेरी बारी आई तो अचानक विकट स्थिति हो गई। हुआ यह कि बाबा ने मुझसे अनेक बातों की जानकारी वैसे ही ली जैसे कोई बहुत दिनों के बाद मिलने वाला पिता अपने पुत्र से लेता है। परन्तु बाबा ने मुझसे कहा, बच्चे, अगले वर्ष जब आओगे तब बाबा तुम्हें गोद लेगा।' प्राणेश्वर बाबा के मुख से निकलने वाला यह वाक्य उस भारी पत्थर के समान साबित हुआ जिसके एक ही प्रहार से, गोद में जाने के सपने रूपी मेरा शीश महल चकनाचूर हो गया। मुझे लगा मानो मुझ पर वज्रपात हो गया हो और मैं दहाड़ मार कर चिल्ला उठा। जिस बाबा से पाँच हजार वर्ष के बाद मंगल मिलन की उम्मीद थी, उस उम्मीद पर पानी फिरने की कल्पना मात्र से मैं फूट-फूट कर रोने लगा। मेरी स्थिति उस अबोध बच्चे की तरह थी जिसके अति प्रिय खिलौने को उसके हाथ से छीनकर किसी ने बहुत दूर फेंक दिया हो। मेरे हृदय पर वैसा ही आघात लगा था जैसा किसी मेहनती आदमी की जीवन भर की संपत्ति छिन जाने पर लगता है। थोड़ी ही देर में मेरा दम चढ़ने लगा, मेरे कपड़े आँसुओं से भीग गये। मेरी ऐसी स्थिति देख बाबा ने तुरंत सभी को कमरे से बाहर जाने को कहा। सभी बाहर चले गये और बाबा ने मुझको हाथ के इशारे से चुप हो जाने को कहना शुरू कर दिया। लेकिन यहाँ तो सब्र का बाँध ही टूट चुका था। रोते-रोते मेरा हाल बेहाल होने लगा था। जब बाबा को लगा कि बच्चा मानने वाला नहीं है तब अंत में बाबा को वचन देना पड़ा, 'अच्छा बच्चे, चुप हो जाओ, रोना ठीक नहीं होता

है, बाबा तुमको अभी गोद लेगा, शांत हो जाओ, बच्चे, शांत हो जाओ।' मीठे बाबा की यह अमृतवाणी, रेगिस्तान की तपती दुपहरी में तड़फते जीव पर मानो जीवनदायिनी शीतल फुहार थी। इसके कुछ क्षणों बाद मेरी स्थिति में सुधार हुआ और मैं चुप हो गया।

गोद का आश्चर्यजनक अनुभव

फिर बाबा ने कहा, 'बच्चे, बाबा गोद तो लेगा लेकिन तुझे भी बाप को एक वचन देना पड़ेगा कि पवित्र रहोगे और बाप का हाथ कभी नहीं छोड़ोगे।' मैंने बाबा के इस वचन को स्वीकार किया और बाबा ने मुझे अपनी गोद में बिठाकर, मीठी दृष्टि देते हुए, कमल-हस्त से मेरे मुख में टोली खिलायी। गोद का यह मिनट-दो मिनट का अनुभव आश्चर्यजनक था, अद्भुत था। जहाँ कुछ क्षण पहले मैं पीड़ा, दुख और अशान्ति के सागर में डूबता जा रहा था, बाबा की गोद में जाते ही, बाबा की मीठी दृष्टि पड़ते ही मैं अपने को शरीर से बिल्कुल भिन्न सितारे की तरह अनुभव करने लगा तथा बाबा के मस्तक में मुझे दो सितारे चमकते हुए नजर आए। बाबा के नेत्रों में झील जैसी गहराई तथा प्रगाढ़ शान्ति की अनुभूति हुई। शान्ति के साथ सुख और आनन्द की सूक्ष्म अनुभूति भी समाई हुई थी। बाबा के शब्दों में इसे 'स्वीट साइलेन्स' की स्थिति कहा जाता है, 'समर्थ स्थिति' कहा जाता है, जिसकी समझ मुझे वर्षों बाद आई।

महसूस हुआ बाबा का पतित पावन स्वरूप

मैं अभी-अभी दुख के सागर में डूब रहा था और अभी-अभी शान्ति के सागर की लहरों में मधुर शान्ति का रसास्वादन करने लगा था। मैं उसी मधुर शान्ति की अनुभूति में बाबा को निहारता हुआ, अपने निवास पर चला गया। लेकिन उक्त घटना पर मेरा चिंतन चलने लगा कि बाबा तो अंतर्यामी हैं, फिर बाबा ने मुझे पहले तड़पाया और फिर अपनाया, ऐसा क्यों? उसी क्षण बाबा का पतित-पावन स्वरूप मुझे दिखाई पड़ने लगा। उस समय मेरी शारीरिक आयु 19 वर्ष थी और परिवार में लौकिक युगल तथा छह माह की पुत्री भी थी, जिसका अब नाम

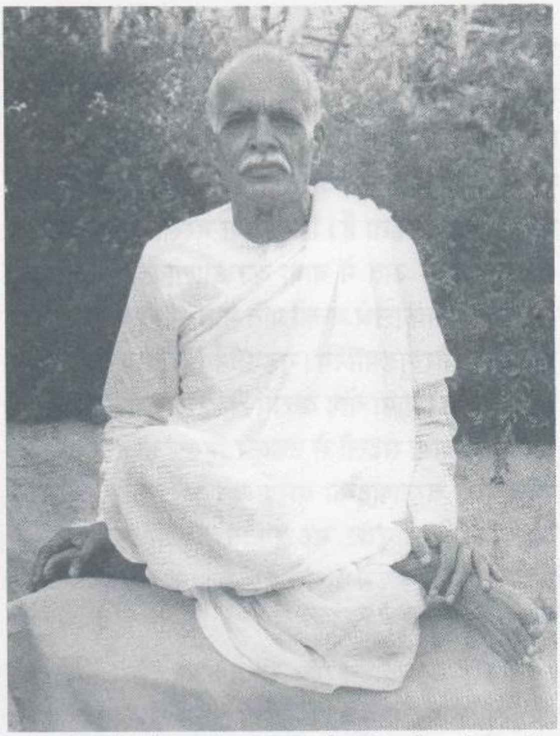

हीरा बहन है और वर्तमान समय ईश्वरीय सेवा में समर्पित है। ज्ञान प्राप्त होने के बाद मुझे स्पष्ट हो गया था कि निराकार शिवबाबा पतित पावन हैं। शिवबाबा का अवतरण ही सर्व आत्माओं को पतित से पावन बनाने के लिए होता है। अत: पवित्रता की धारणा में बाबा के पास रंचमात्र भी छूट की सम्भावना नहीं है। अत: हर एक बच्चे से बाबा सम्पूर्ण पावन बनने की प्रतिज्ञा कराता ही है। ज्ञान की चढ़ाई की पहली सीढ़ी ही पवित्रता है। यज्ञ के आरम्भ में अनेक विघ्न पड़े थे, उन विघ्नों का कारण भी बाबा के द्वारा स्थापित पवित्रता का अटल नियम ही तो था। अत: पवित्रता के गहन रहस्यों को समझाने के लिए ही प्यार और पवित्रता के सागर बाबा ने मेरे प्रथम मिलन में ही आश्चर्यजनक, आह्लादकारी, सुखान्तक खेल खेला। इस अविस्मरणीय खेल की उसी रूप में आज तक स्मृति बनी हुई है और प्रेरणा दे रही है।

बाबा का अति निरहंकारी रूप

अगले दिन बाबा के अति निरहंकारी, विश्व के सर्व बच्चों का ध्यान रखने वाले, सर्व बच्चों के प्रति

सम्पूर्ण समर्पित स्वरूप का दर्शन हुआ। जिन्होंने साकार बाबा से मुरली सुनी हुई है, उन्हें याद होगा कि बाबा हिस्ट्री हॉल में पधार कर, संदली पर विराजते थे और तब कोई न कोई गीत बजा करता था, जो मुरलियों में संक्षिप्त रूप में लिखा रहता है। फिर बाबा मुरली आरम्भ करते थे। मुरली के अंत में बाबा का आशीर्वचन होता था, मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा का यादप्यार और गुडमॉर्निंग। गुडमॉर्निंग के बाद क्लास पूरा हो जाता था। बाबा योग कराते थे, टोली बाँटी जाती थी और फिर बाबा संदली से उठकर हिस्ट्री हॉल के गेट पर पहुँच कर, चरणपादुका धारण करके, क्लास के बच्चों की तरफ मुख करके, सर झुकाते हुए अंतिम महावाक्य अभिवादन के रूप में बोलते थे, 'रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते।'

उस अभिवादन के समय का दृश्य बड़ा ही वण्डरफुल अनुभव हुआ। मुझे लगा कि बाबा हिस्ट्री हॉल के गेट पर नहीं खड़े हैं लेकिन वापिस परमधाम लौटने के लिए सृष्टि रंग-मंच पर खड़े हैं और सम्पूर्ण जगत की ओर देख रहे हैं। सारी दुनिया से, सभी धर्मों के बच्चों की ओर से, परमात्मा पिता को नमन करने की आवाज आ रही है। लाखों-करोड़ों भक्त अपने-अपने ढंग से, अपनी-अपनी भाषाओं में ईश्वर को नमन कर रहे हैं और ब्रह्मा तन में विराजमान विश्वनाथ बाबा उन सभी का अभिवादन स्वीकार कर रहे हैं। उनके मुख से विश्व के सभी बच्चों के अभिवादन के उत्तर के रूप में निकल रहा है, 'रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते।'

बाबा का गरीब निवाज रूप

मधुबन प्रवास के दौरान बाबा के गरीब निवाज रूप का भी दर्शन हुआ। मुजफ्फरपुर शहर में शिवबाबा का 'गरीबनाथ' नाम से प्रसिद्ध मंदिर है जहाँ रोज तो भक्तों का जमघट होता ही है लेकिन खास सावन मास में लाखों लोग रोज जल अर्पित करते हैं।

बाबा का रमणीकता से ओत-प्रोत रूप

बाबा का शरीर भले ही पुराना लगता था लेकिन

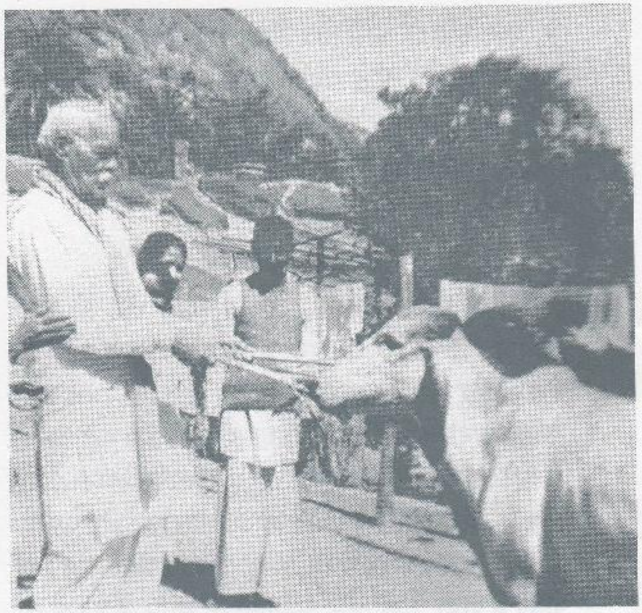

बाबा का चलना, खेलना, निरंतर मधुबन में कार्यों का ध्यान रखना, किसी शक्तिशाली युवा से कम न था। समय की पाबंदी में तो बाबा नम्बर वन थे। उस समय रात्रि क्लास से पहले, मधुबन आने वाले हर एक को अपना अनुभव सुनाना होता था। एक बहन अनुभव सुना रही थी लेकिन उसे बताया गया कि समय कम है अत: बाबा के पधारने से पहले ही वह जल्दी-जल्दी अनुभव पूरा कर देना चाहती थी। उसके पूरा करने के पहले ही, अपने निश्चित समय पर बाबा गेट पर आ गये। बाबा ने जब देखा कि बच्ची की सुनाने की रफ्तार कम नहीं हो रही है तो बरामदे में टहलने लगे। चंद मिनटों में उस बहन का अनुभव पूरा हुआ और तुरंत संदली पर आकर विराजते हुए बाबा बोले, 'आज लखनऊ एक्सप्रेस मधुबन आयी है।' बाबा के इस प्रकार बोलते ही हर्षोल्लास से हिस्ट्री हाल गूँज उठा। इस तरह बाबा का हर बोल अनोखा, प्रेरणादायी और हर्षित करने वाला था। मानव सृष्टि के आदि पिता, बापदादा के अनकों स्वरूपों का अनुभव करते हुए मैं सप्ताह बाद लौकिक स्थान पर लौट आया और मन रूपी मंदिर में सदा-सदा के लिए बाबा स्मृति के रूप में बस गये। ऐसे महानतम प्राणेश्वर बापदादा को बारंबार नमस्ते! नमस्ते!! नमस्ते!!! ■■■

मुझे शिवबाबा ने अव्यक्त वतन में पढ़ाया

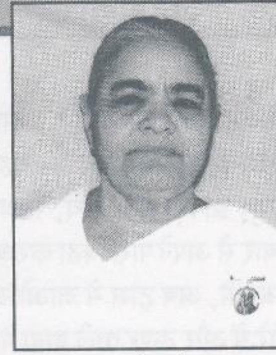

■■■ ब्रह्माकुमारी कैलाश, गांधीनगर (गुजरात)

हिमाचल प्रदेश की पहाड़ियों के बीच, व्यास नदी के किनारे एक छोटा-सा गाँव है नादोन। मेरा बचपन इसी गाँव में गुजरा। अनेक ज्योतिषियों और पण्डितों ने मेरे भविष्य के बारे में यही स्पष्टीकरण दिया कि यह संन्यासी बनेगी, आयु भी बहुत कम है अर्थात् 25 वर्ष के बाद चली जायेगी। दादी माँ का मुझसे विशेष स्नेह था। यह सब सुन कर उन्होंने मुझे विद्यालय में पढ़ने भी नहीं भेजा। उन्होंने सोचा कि जब थोड़े समय जीना है और संन्यासी बनना है तो पढ़ कर क्या करेगी? न स्कूल जायेगी, न किसी संन्यासी के सम्पर्क में आयेगी।

सफेद वस्त्रधारी बहनों का आकर्षण

मेरे पिताजी, माताजी और बड़े भैया प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय में जाया करते थे। उन दिनों मैं लगभग 10 वर्ष की थी। ऐसे तो मैं बहुत कम बोलती थी परन्तु एक दिन मेरे आग्रह करने पर मेरे माता-पिता मुझे भी ईश्वरीय विश्व विद्यालय में ले गये। सफेद वस्त्रधारी बहनें मुझे इतनी अच्छी लगीं कि मेरा मन आश्रम पर ही रहने के आकर्षण में बंध गया। आयु छोटी होने के कारण आश्रम पर रहने की अनुमति मिलने में अनेक विघ्न आये परन्तु परमात्मा शिव की गुप्त मदद से मुझे यह अनुमति भी मिल गई और 12 वर्ष की आयु में मैं हमीरपुर सेवाकेन्द्र पर रहने लगी। पंजाब के विभिन्न सेवा-स्थानों पर मैं बहनों के साथ आती-जाती रहती थी। जब बाबा से मिलने पहली बार मधुबन आई तो मेरी आयु लगभग चौदह वर्ष की थी।

बाबा ने दिया झोपड़ी में आने का निमन्त्रण

मीठे बाबा से मिलन मुलाकात के समय, वरिष्ठ बहनों ने मेरा परिचय करवाते हुए प्यारे बाबा को कहा – 'बाबा, यह कुमारी पहाड़ी इलाके की है और पढ़ी हुई भी नहीं है लेकिन ध्यान में जाती है।' इसके बाद सभी भाई-बहनें बाबा से मिल कर बाहर निकलने लगे, मैं बाबा के पास ही खड़ी थी। बाबा ने कहा – 'बच्ची, कल साढ़े दस बजे बाबा से मिलने झोपड़ी में आना।' मेरी खुशी का कोई पारावार नहीं था।

बाबा स्वयं आ गये मिलने

अगला दिन आने तक मन में यही चिन्तन बार-बार चलता रहा कि मुझे बाबा से मिलने जाना है। आज जहाँ प्यारा-प्यारा शान्तिस्तम्भ है, उन दिनों वह जगह खाली थी। अगले दिन सुबह मैं वहीं एक कोने में, नल के नीचे कपड़े धुलाई कर रही थी। मन में धुन चल रही थी, 'मुझे बाबा से मिलने जाना है, मुझे बाबा से मिलने जाना है' लेकिन इस धुन में मुझे समय का अहसास नहीं रहा। इतने में उस शांतिस्तम्भ वाले खाली मैदान की तरफ बड़ी दीदी और सन्तरी दादी के साथ प्यारे बाबा आये। मैं अपने कार्य में व्यस्त थी। अचानक किसी ने पीछे से आकर, मेरी आँखों को हाथों से बंद कर लिया। साबुन वाले हाथ होने के कारण मैंने अपने हाथों से उन हाथों को पकड़ा भी नहीं और हटाने की चेष्टा भी नहीं की बल्कि मैं एक-एक करके सभी बहनों के नाम उच्चारने लगी। लेकिन मेरी आँखों पर से हाथ नहीं हटे। मैं थोड़ा तंग होकर बोली – 'आखिर कौन है बाबा, बोलो न बाबा?' तुरन्त आँखों से हाथ हट गये। मैंने देखा पीछे प्राण प्यारे बाबा खड़े थे और कह रहे थे – 'बच्ची, सब देहधारियों को याद करने के बाद आखिर अन्त में ही बाबा याद आये ना।' फिर बाबा ने मेरे हाथ धुलवाए और पूछा– 'बच्ची, बाबा से

मिलने क्यों नहीं आई?' 'आप नहीं आई तो बाबा स्वयं आपको लेने आ गये' – यह कह कर बाबा मुझे अपने साथ झोपड़ी में ले गये, साथ में बड़ी दीदी भी थी। बड़े प्यार से अपने पास बिठा कर बाबा ने दृष्टि देते हुए कहा – 'बच्ची, अब ट्रांस में जाओ और देख करके आओ कि मेरे में और ऊपर वाले बाबा में क्या फर्क है?'

ध्यान में देखा प्यारे ब्रह्मा बाबा का सम्पूर्ण रूप

मैं ध्यान में चली गई। थोड़ी देर बाद जब मैं नीचे आई तो बाबा ने पूछा – 'अच्छा बच्ची, बाबा के पास जाकर आई?' मैंने कहा – 'जी बाबा।' बाबा ने पूछा – 'कैसे थे बाबा, देखा?' मैंने कहा – 'हाँ जी बाबा, बहुत अच्छे थे।' बाबा बोले – 'तो मैं? ऊपर वाले बाबा अच्छे कैसे थे, क्या कोट-पतलून पहना था?' मैंने कहा – 'बाबा, कपड़े तो आप जैसे ही पहने थे।' बाबा ने फिर पूछा – 'तो अच्छे कैसे थे, ऊपर वाले बाबा में क्या विशेषता थी?' मैंने कहा – 'ऊपर वाले बाबा से चारों ओर प्रकाश-ही-प्रकाश निकल रहा था। वे मानो प्रकाश के बीच में ही विराजमान थे।' फिर बाबा बोले – 'यह बाबा तो पुरुषार्थी है, इसलिए आपको ऊपर भेजा कि पता पड़े कि दोनों बाबा (साकार ब्रह्मा और अव्यक्त ब्रह्मा) में क्या अन्तर है। बाबा सन्देशियों को ट्रांस में भेज कर यह वैरीफाय (जाँच) करते हैं कि इस बाबा को पुरुषार्थ करके कहाँ तक पहुँचना है।' मैं तो उस समय पुरुषार्थ की इस गुह्यता को समझती ही नहीं थी। फिर बाबा ने कहा – 'अरे बच्ची, आपका इतना अच्छा ट्रांस (ध्यान) का पार्ट है। बाबा तुमको जयपुर भेजना चाहते हैं, जाओगी?' मैं बोली – 'जरूर जाऊँगी बाबा।' मेरी सहमति होने पर प्यारे बाबा ने मुझे जयपुर भेज दिया। बाबा ने 6 मास बाद मधुबन में यह जानने के लिए मुझे बुलाया कि मुझे जयपुर में अच्छा लगता है या नहीं। इतने बच्चे होते हुए भी बाबा एक-एक का इतना ख्याल रखते थे।

तुम ब्रह्माकुमारी क्यों बनी?

जयपुर से मधुबन आकर जब मैं बाबा से मिली तो बाबा ने पूछा – 'बच्ची, तुम्हें जयपुर अच्छा लगता है?' मैंने कहा – 'जी बाबा।' बाबा ने फिर पूछा, 'लौकिक घर में तुमको प्यार से रखते थे फिर तुम ब्रह्माकुमारी क्यों बनी?' मैंने कहा, 'बाबा बहनें अच्छी लगती हैं।' बाबा बोले, 'और क्या अच्छा लगता है?' मैंने कहा – 'बाबा, आप और आपकी मुरली।' बाबा ने फिर पूछा – 'रोज़ मुरली पढ़ती हो?' मैंने कहा – 'नहीं बाबा।' बाबा बोले – 'मुरली अच्छी लगती है फिर क्यों नहीं पढ़ती हो?' बड़े दु:खी स्वर में मैंने कहा – 'बाबा, मुझे पढ़ना नहीं आता। मैं पढ़ी हुई नहीं हूँ। विद्यालय में कभी गई ही नहीं।' भाग्यविधाता बाप ने तब स्नेह भरी नजरों से निहारते हुए मुझे कहा – 'बच्ची, पढ़ना तो बहुत था, फिर पढ़ी क्यों नहीं? यदि बच्ची पढ़ी हुई होती तो विदेश की सेवा भी करती।' मैंने धीरे से कहा – 'बाबा, ड्रामा में नूँध नहीं होगी।' तब बाबा ने मुस्कराते हुए कहा – 'बाबा का दिया ज्ञान, बाबा को ही सुना रही हो?'

बाबा ने दिया पढ़ाने का निमंत्रण

जानीजाननहार भगवान बाप मुझ आत्मा के 84 जन्मों की कहानी को पूर्ण रीति से जानते हैं और इसलिए तब उन्होंने कहा – 'बच्ची, तुम्हारी आयु (जीवन की अवधि) बहुत कम है, सिर्फ 25 वर्ष ही है, फिर भी हो सकता है कि योग से आयु बढ़ जाये। योगियों की आयु योगबल से बढ़ती है। योगियों की श्वास धीरे-धीरे चलती है ना इसलिए आयु बढ़ती है। तुमको तो छोटेपन में ही संन्यासी बनना था। अब भगवान के घर रह कर ब्रह्माकुमारी बन गई तो संन्यास ही हुआ ना।' बाबा ने आगे कहा – 'आज शाम चार बजे ऑफिस में आ जाना, बाबा तुझे पढ़ायेंगे। तू जल्दी ही सीख जायेगी।'

बाबा आँखों में आँसू नहीं देख सकते

सायं चार बजे मैं बाबा के पास आफिस में गई। बाबा ने कागज पर सिन्धी भाषा में लिखना शुरू किया। एक-दो लाइन ही लिखी थी कि जयपुर से रुक्मिणी दादी का फोन आ गया। उन्होंने बाबा को कहा कि कैलाश बहन को जल्दी-से-जल्दी जयपुर भेज दो, यहाँ बहुत सेवा है। मैंने तुरन्त बाबा को कहा – 'बाबा, मैंने कहा था न, मेरा

पढ़ना ड्रामा में है ही नहीं।' इतना कह कर मैं रो पड़ी। बाबा बोले – 'कोई भी माँ-बाप बच्चों की आँखो में आँसू नहीं देख सकते। बच्ची, बाबा तो है ही दु:खहर्त्ता-सुखकर्त्ता। फिर बाबा तुम्हारी आँखों में आँसू कैसे देख सकते हैं?' फिर बाबा के पूछने पर मैंने जयपुर की अपनी दिनचर्या सुनाई। बाबा गम्भीर होकर बोले – 'देखो बच्ची, दिन में तो तुम्हें समय नहीं मिलेगा। जब सोने जाओ तब तुम कॉपी-पेन लेकर एकांत में बैठ जाना। शिव बाबा तुम्हें पढ़ायेगा।' मैं सोच में पड़ गई कि शिव बाबा कैसे पढ़ायेंगे? शिव बाबा तो बिन्दु रूप हैं, परमधाम में रहते हैं, साकार बाबा मधुबन में रहते हैं, मैं जयपुर में, तो बाबा मुझे पढ़ायेंगे कैसे? मेरे इस चिंतन की लहरें बाबा ने पहचान लीं और कहा – 'बच्ची, तेरे को बाबा पर विश्वास है?' मैंने कहा – 'बाबा, विश्वास है तभी तो आपके घर में हूँ।' बाबा ने कहा – 'बच्ची, बाबा के बोलों पर विश्वास रखो।' मैंने कहा – 'जी बाबा।' फिर बाबा ने मुझे थोड़ी सावधानी देते हुए कहा – 'बच्ची, तुम ऐसी जगह बैठना जहाँ किसी प्रकार की डिस्टर्बेन्स (आवाज़) न हो, किसी को बताना भी नहीं। अगर सभी को सुना दोगी तो कोई भी आपको शान्ति से बैठने नहीं देगा।'

मैं बाबा से छुट्टी लेकर जयपुर पहुँच गई। उस समय दादा आनन्द किशोर जयपुर में रहते थे। मैंने उनके पास जाकर कहा – 'दादा, मुझे कॉपी-पेन चाहिए।' दादा ने हँस कर कहा – 'आपको पढ़ना तो आता नहीं, फिर कॉपी-पेन लेकर क्या करोगी।' मैंने कहा – 'बस ऐसे ही चाहिए।' उन्होंने मुझे कॉपी-पेन दे दिए।

बाबा ने वतन में बुला लिया

उन दिनों रात्रि के समय सोने से पहले कचहरी (दिनचर्या पर दृष्टिपात) होती थी। दादी जी ने सारे दिन का सेवा-समाचार सभी बहनों से सुना, दूसरे दिन के लिए सेवा निर्धारित की, फिर सभी सो गए; पर मेरी आँखों में नींद नहीं थी। मेरे कमरे की अन्य बहनें सो चुकी थीं, मेरे मन में बाबा के शब्द गूँज रहे थे – 'जब सब सो जाएँ, तो एकान्त में, बाबा की याद में कॉपी-पेन लेकर बैठ जाना।' मैं सोच-सोच कर हैरान भी हो रही थी कि बाबा मुझे पढ़ायेंगे कैसे? मैं उठ खड़ी हो गई, कॉपी-पेन लिया और दादी जी के ऑफिस में जाकर वहाँ एकान्त में बाबा की याद में बैठ गई। तुरन्त बाबा ने मुझे वतन में बुला लिया। वतन में पहुँच कर मैंने देखा कि सामने से बहुत स्नेह से मुस्कराते हुए बाबा मेरी ओर चले आ रहे हैं। मैंने भोलेपन से कहा – 'बाबा, मैं तो सोच रही थी कि बाबा मुझे यहाँ कैसे पढ़ायेंगे?' बाबा ने स्नेह से कहा – 'बच्ची, बाबा मधुबन से रोज़ यहाँ वतन में तुझे पढ़ाने आयेगा, फिर तो तुम पढ़ोगी ना।' मैंने कहा – 'जी बाबा, ज़रूर पढ़ूँगी।'

आठ दिन में सीख गई पढ़ना

अब वतन में ही बाबा ने मेरा हाथ पकड़ा और मुरली के ही शब्द लिखवाने शुरू किए, जैसे कि 'शिव बाबा', 'ब्रह्मा बाबा', 'मम्मा', 'ज्ञान', 'मुरली'...... आदि-आदि। आठ दिन तक लगातार बाबा रात्रि के समय मुझे वतन में बुलाते रहे और 10 या 12 मिनट पढ़ाते। इस प्रकार मैं पढ़ना सीख गई। यह जीवन का अत्यधिक अनोखा अनुभव था। फिर तो मैं मुरली लेकर रोज़ अकेले में अभ्यास करने लगी। इस प्रकार प्यारे बाबा ने मुझे अव्यक्त वतन में पढ़ा कर मेरी आत्मिक उन्नति का मार्ग प्रशस्त कर दिया।

साँप बच्चे को मारना नहीं

एक बार मैंने बाबा से कहा – 'बाबा, मैं साँप से बहुत डरती हूँ।' बाबा ने कहा – 'क्यों बच्ची, आप शिव शक्ति नहीं हो क्या? आप तो आत्मा हो, साँप तो आपका कुछ भी नहीं बिगाड़ सकता।' मुझे बाबा के बोल पर निश्चय था सो मेरा भय समाप्त हो गया। इसके बाद मधुबन में एक बार बहुत बड़ा साँप आया और वह बाबा के कमरे की ओर जाने लगा। मैंने उसे मार डाला। इतनी देर में बाबा आए और बोले – 'बच्ची, इस बच्चे को क्यों मार डाला? इसे बगीचे में छोड़ आती।' मैंने कहा – 'बाबा, यह बच्चा थोड़े ही है, यह तो साँप है, काट लेता है।' बाबा ने कहा – 'नहीं बच्ची, इसको कभी नहीं मारना।' इसके बाद मैंने कभी न मारने का संकल्प कर

लिया क्योंकि बाबा ने मुझे यह पाठ पक्का करवा दिया था कि कैसा भी प्राणी क्यों न हो, सभी के लिए शुभ भावना रखना ही सच्चे योगी की निशानी है।

नीचे वाले और ऊपर वाले बाबा में अन्तर हुआ समाप्त

बाबा के अव्यक्त होने के कुछ दिन पहले मैं बीमार हो गई थी। बाबा ने मुझे मधुबन बुलाया और हाल-चाल पूछा तो मैंने कहा – 'बाबा, मुझे बार-बार यही संकल्प आते हैं कि आप हमें छोड़ कर चले जाओगे।' बाबा ने दिलासा देते हुए कहा – 'नहीं, नहीं, ऐसी कोई बात नहीं, तुम्हारा योग कम हो गया, इस कारण ऐसे संकल्प आते हैं; किसी अन्य को क्यों नहीं आये ये संकल्प, योग किया करो बच्ची।' फिर बाबा ने मुझे ध्यान में जाकर यह देखने के लिए कहा कि ऊपर वाले बाबा कैसे हैं? ध्यान में मैंने देखा कि साकार बाबा की स्थिति ऊपर वाले बाबा जैसी ही थी। नीचे आने पर मैंने बाबा को बताया – 'आप ही नीचे हैं और ऊपर भी आप ही हैं। अब आप में अन्तर नहीं दिखता।' तब बाबा ने कहा – 'बच्ची, याद होगा, शुरू में जब आपको ऊपर वाले बाबा को देखने भेजा था तो आपने कहा था कि ऊपर वाले बाबा ज़्यादा प्रकाशमय हैं, आप में और ऊपर वाले बाबा में अन्तर है। तब बाबा ने वायदा किया था कि नीचे वाला बाबा भी एक दिन ऐसा ही बन जायेगा। वह समय आ गया है। बाबा ने अपना वायदा पूरा कर लिया है।' इसके कुछ मास बाद ही बाबा अव्यक्त हो गये। ■■■

प्रेम का पथ निराला

■■■ ज्योतीन्द्र नाथ प्रसाद, पटना

प्रेम वह अनुभूति है जो सबके मन को गुदगुदाती है, इसे ईश्वरीय अनहद नाद कहते हैं। यह न घर में उपजे, न हाट बिकाये। इसमें न बड़प्पन है और न छोटापन। यह ऐसी समता है जो आदमी को आदमी से जोड़ती है।

यह प्रेम किसी से प्रतिदान नहीं मांगता। यह तो चातक है चन्द्रमा को निहारता हुआ। भला चाँद को क्या मालूम कि चाहता है उसको कोई चकोर। यह तो दो जाने-अनजानों के बीच ऐसा संभाषण है जिसमें किसी पक्ष को दूसरे से अपेक्षा नहीं। चाहे वो वार्तालाप कर रहे हों या नि:शब्द बैठे हों। इसमें न कोई शर्त है और न स्वार्थ। दो जन मिले, साथ चले और ऐसे जुदा हुए जैसे फिर मिलेंगे और फिर अनकही कहेंगे।

हम अगर सच्चे हृदय से प्रेम करें भगवान को तो फिर क्या प्रार्थना और मांगें। बस, तुम मिल जाओ। मेरे तो एक शिवबाबा, दूजा न कोई। मुझे कुछ नहीं चाहिए। बस, तुम सदा साथ रहो।

दाम्पत्य जीवन में पत्नी सहचरी है, मेरा आधा अंग है। रामकृष्ण परमहंस और उनकी भार्या माँ शारदा सदृश्य हमारा संबंध अब दैहिक नहीं, दैविक है। यह ईश्वरीय प्रेम ही खींच लाया मुझे ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय में। अनेक दीदियाँ और दादियाँ विश्व शान्ति के लिये प्रयासरत हैं। मुझ अकिंचन का भी इस संगठन से जुड़ना शान्ति की दिशा में एक कदम है। मुझे तो गर्व है कि बाबा मुझे रोज मुरली की तान सुनाते हैं जिससे मेरा दिन भर का काम आराम और सुकून से हो जाता है।

अब तो यह आलम है कि अपना दिमाग ठंडा है तो घर भी ठंडा है। मेरा परिवार बड़ा है। इसमें भाई-बहन, पत्नी, पुत्री, पुत्र, माता और दोस्त हैं। इनके प्रति कोई विकार न आये, सिर्फ प्रेम भाव रहे, बस, इतनी ही कामना है शिवबाबा। दीदी गुरु सदृश्य मिली हैं, जो मुझे भाई-सा स्नेह देती हैं और जब भी उनके पास जाता हूँ तो वे आपसे साक्षात्कार कराती हैं कुछ उसी तरह जैसे स्वामी विवेकानंद को रामकृष्ण परमहंस काली जी का दर्शन कराते थे।

घर से बाहर कदम रखते ही दुनिया की शुरुआत होती है और मेरे मन में 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की भावना जगती है। मैं सोचता हूँ, मेरा व्यवहार ऐसा हो कि जब तक मैं बाहर रहूँ, इसे अपना ही घर समझूँ। प्रेम-प्रीत का चोला पहिर कबीरा नाच।

मुरली में बाबा कहते हैं कि विश्व को सुंदर बनाओ ताकि सतयुग आए। मेरा भी लक्ष्य सतयुग लाने का है।मेरे सारे कर्म इस उद्देश्य की सिद्धि के लिये साधन मात्र हैं। ■■■

बाबा ने कहा --
बच्चे का वर्तमान और भविष्य दोनों महान हैं

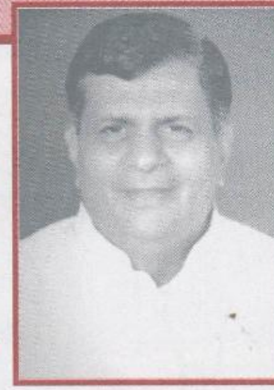

ब्रह्माकुमार दशरथ भाई, पूना

ब्रह्मा बाबा लौकिक जीवन में जवाहरी थे। बाबा को नई-नई गाड़ियाँ लेने का बहुत शौक था। दुनिया में गाड़ी का जो पहला-पहला मॉडल निकलता था, उसे बाबा खरीदते थे। फिर सभी देखने आते थे कि नया मॉडल कौन-सा निकला है। बाबा के हीरे-जवाहरातों के ग्राहक भी बड़े-बड़े राजा-रजवाड़े थे। ऐसे ऊँचे, रॉयल जीवन वाले बाबा के मन में वैराग्य जागृत करने के लिए साक्षात्कार के अलावा शिवबाबा के पास अन्य कोई साधन नहीं था। मुम्बई में बाबुलनाथ का जो मन्दिर है, उसके सामने बाबा का फ्लैट था। बाबा जब मुम्बई में होते थे तो दर्शन करने जरूर जाते थे। बाबा विष्णु के पक्के भगत थे इसलिए उन्हें पहले-पहले विष्णु का ही साक्षात्कार शिवबाबा ने करवाया। उसके बाद एक-एक करके विष्णु मंदिरों के साक्षात्कार हुए जैसे द्वारकाधीश, श्रीनाथ, बद्रीनाथ आदि-आदि। बाबा ने 12 गुरु किए थे परन्तु सच्ची शान्ति उन्हें तब मिली जब 13वाँ गुरु मिला इसलिए भक्ति में 13वें का बहुत महत्व है।

बाबा बनारस में अपने दोस्त की कोठी में रहकर एकान्त चिन्तन करते थे। वहीं बाबा को विनाश का साक्षात्कार हुआ था कि भारत से बाहर बमों द्वारा और देवभूमि भारत के अन्दर प्राकृतिक विपत्तियों से विनाश होगा। बड़े-बड़े बाँध भारत में बने हुए हैं। बाबा कहते थे, ये मौत के कुएँ हैं। जब भूकम्प होगा तो ये कुएँ फट जाएँगे और लोग डूबकर, बहकर देह त्याग कर देंगे।

मेरा बच्चा आने वाला है

पूना के पास नारायण गाँव में बाबा की एक गीता पाठशाला चलती थी। जिस दिन मुझे उस पाठशाला में ज्ञान सीखने जाना था, उस सुबह अमृतवेले पाठशाला के निमित्त टीचर को साक्षात्कार हुआ। वे सोए हुए थे, किसी ने उनकी चद्दर खींची, वे झट उठ करके बैठे कि किसने चद्दर खींची। देखा तो सामने बाबा थे। बाबा ने कहा, आज मेरा बच्चा आने वाला है। इतना कह कर बाबा अदृश्य हो गये। गीता पाठशाला में सुबह मुरली सुनाने के बाद वे इन्तजार करने लगे कि देखूँ, कौन आने वाला है। तभी हाफ पेन्ट और शर्ट पहने मैं पहुँचा। मैं नौवीं कक्षा का अन्तिम पेपर देकर आया था और मन में पक्का निश्चय करके आया था कि बाबा का ज्ञान सुनना ही है। मैं जैसे ही पाठशाला के दरवाजे पर पहुँचा, पाठशाला के निमित्त टीचर मुझे देख खड़े हो गए। मैं डर गया कि शायद मेरे से कोई गलती हो गई। वे बड़े प्रेम से बोले, आओ, आओ और ज्ञान सुनाने लगे। मैं सुनते-सुनते ऊपर-ऊपर उड़ने लगा।

आकर्षित किया त्रिमूर्ति के चित्र ने

उन दिनों ज्ञान के दो ही चित्र हुआ करते थे, एक त्रिमूर्ति और दूसरा कल्पवृक्ष। ये दोनों चित्र बाबा ने दिव्य दृष्टि के आधार पर बनवाए थे। जब निमित्त टीचर ने त्रिमूर्ति का परिचय देना शुरू किया तो मुझे वह चित्र बहुत अच्छा लगा। आज तक तो तीनों देवताओं का एक साथ जुड़ा हुआ चित्र ही देखा था लेकिन ज्ञान के इस चित्र में तीनों को अलग-अलग दिखाया गया है और इन तीनों के ऊपर शिवबाबा को दिखाया गया है। तीनों देवताओं का परिचय मिलने के बाद मुझे अलंकारी विष्णु जी बहुत ही अच्छे लगे। मैंने टीचर से पूछा, क्या मैं विष्णु जी को मिल सकता हूँ? उसने कहा, वो तो सतयुग में श्री लक्ष्मी, श्री नारायण के कम्बाइन्ड रूप में होते हैं। फिर मैंने देखा कि शंकर जी भी बड़े अच्छे हैं, उनके गले में कोई साँप आदि नहीं है। मैंने पूछा, क्या शंकर जी से मिल सकता हूँ? उन्होंने कहा, वो तो सूक्ष्म वतन में होते हैं। फिर मैंने पूछा,

शेष भाग पृष्ठ 30 पर

यदि हम अपने से छोटों में आज्ञाकारिता देखना चाहते हैं तो वे भी हममें आदर्श उदाहरण देखना चाहते हैं

जब भक्ति को भगवान मिला

■■■ ब्रह्माकुमारी वीरबाला, लखनऊ (उत्तरप्रदेश)

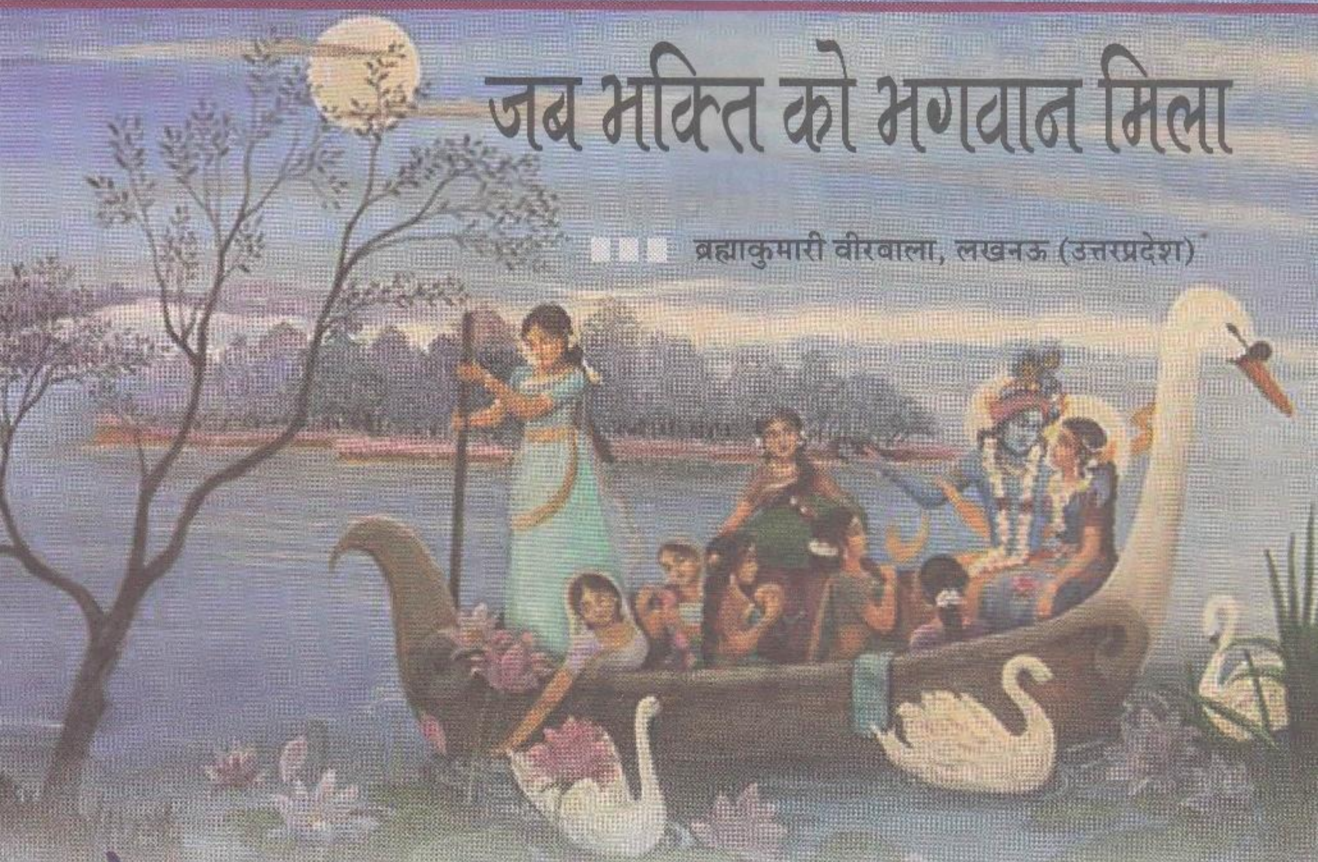

मेरा जन्म जिला मुरादाबाद के एक धार्मिक एवं शुद्ध शाकाहारी परिवार में हुआ था। मेरे पिता भगवान शिव के परमभक्त थे। वे प्रातः चार बजे उठ जाते और ॐ नमः शिवाय गुनगुनाते हुए स्नानादि से निवृत्त हो मंदिर में जाकर शिवोपासना करते। तत्पश्चात् वे अपना दैनिक कार्य शुरू करते। वे आदर्श शिक्षक थे। इतना ही नहीं, उन्होंने पौराणिक कथायें सुनाकर हम बच्चों को भी अमृतवेले उठने की आदत डाल दी थी।

अमृतवेले उठने का दैनिक नियम बन गया

वे सुनाते थे, 'सुबह चार बजे भगवान शिव और माता पार्वती विमान पर बैठ कर सृष्टि भ्रमण को निकलते हैं। जो उस समय उनकी याद में बैठे होते हैं उन्हें वे दर्शन देते, बातें करते और वरदान देते हैं।' दर्शन के लालच में हम रोज अमृतवेले उठकर छत पर जा बैठते और आसमान की तरफ देखते रहते। परन्तु भगवान तो हमें दर्शन देते नहीं थे। अपनी बात पिता को बताते तो वे कह देते, भगवान के नाम में निश्चय रखो, वे कभी न कभी, कहीं न कहीं मिलेंगे अवश्य। लौकिक पिता की शिक्षाओं का असर यह हुआ कि प्रातःकाल उठकर पूजा-पाठ करना दैनिक नियम बन गया। भक्ति की यात्रा करते-करते युगल राजेश्वर जी द्वारा मुझे शिवबाबा का संदेश मिला और प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय में जाना प्रारम्भ कर दिया।

पढ़ा ज्ञान का पहला पाठ

सन् 1955 की बात है। उस समय लखनऊ में केवल एक सेवाकेन्द्र था। उस छोटे-से सेवाकेन्द्र में अति श्रेष्ठ आदि रत्न बहनें – गुलजार बहन, शान्तामणि बहन, ईशु बहन तथा कृष्णी बहन जैसी महारथियों द्वारा ज्ञान का पहला पाठ पढ़ा। बहनों का शुद्ध-सात्विक जीवन और पवित्र वातावरण मन को आकर्षित करने लगा। युगल राजेश्वर जी मेरे पथ-प्रदर्शक एवं प्रेरणास्रोत थे। उन्होंने मुझसे पहले ज्ञान में चलना शुरू किया था और वे

लखनऊ पार्टी के साथ साकार बापदादा से मिल कर आये थे। बाबा ने उन्हें ज्ञान और खुशी के खजाने से भरपूर कर पूर्ण निश्चय बुद्धि बनाकर भेजा था। उनके सहयोग से ज्ञान मार्ग में आने वाली बाधायें सहज दूर हो जाती थीं। जीवन में यदि अच्छा साथी मिल जाये तो रास्ते सरल हो जाते हैं।

बाबा से सम्मुख मुलाकात

निराकार परमात्मा का, साकार मनुष्य तन (ब्रह्मा तन) में अवतरित हो, स्थूल तनधारी मनुष्य आत्माओं से मिलना, विश्व का सबसे बड़ा आश्चर्य था। आखिर मई, 1958 में लखनऊ पार्टी के साथ हम मधुबन पहुँचे। तैयार होकर सबसे पहले बाबा से मिलने उनके कमरे में गये। कमरे में अनन्त शान्ति फैली हुई थी और बाबा दरवाजे के पास संदली पर योगमुद्रा में बैठे थे। पार्टी के साथ मैं भी बाबा के सामने याद में बैठ गई। धरती पर पधारे परमात्मा से मिलने की उत्कंठा थी। बचपन से उनकी भक्ति की थी, उन्हें पुकारा था, प्रार्थना की थी, 'हे प्रभु आनन्द दाता! ज्ञान हमको दीजिये।शीघ्र सारे दुर्गुणों से दूर हमको कीजिये। लीजिये हमको शरण में, हम सदाचारी बनें। ब्रह्मचारी धर्मरक्षक, वीर व्रतधारी बनें।' अजब जादू था बाबा की रूहानी नजर में। शरीर से डिचैट होकर आत्मा आँखों ही आँखों में परमात्मा से बातें करने लगी। मैं अनुभव कर रही थी, भगवान शिव ब्रह्मा के रथ रूपी विमान में बैठ कर उतरे हैं और कह रहे हैं, बच्ची, भक्तों को उनकी भक्ति का फल देने, उनकी मनोकामनायें पूर्ण करने ड्रामा प्लैन अनुसार आता हूँ। तुम बच्चे केवल शरण में ही नहीं आते बल्कि गोदी के बच्चे बनते हो। ब्रह्मा मुख द्वारा सहज ज्ञान, राजयोग व कर्मयोग की शिक्षा देता हूँ जिसे जीवन में धारण करने से तुम्हारे दुर्गुण दूर होते हैं और तुम सदाचारी बन जाते हो। मेरे द्वारा स्थापित रुद्र यज्ञ से देवी-देवता धर्म की स्थापना होती है। तुम बच्चे यज्ञ के रक्षक भी हो और धर्मरक्षक भी।

नजर से हुई निहाल

साकार बाबा से सम्मुख दृष्टि लेने का अनुभव सचमुच निराला था। साक्षात्कार ना होने पर भी आत्मा इतनी ध्यान-मग्न हो जाती जैसे हम यहाँ होते भी यहाँ नहीं हैं। बिना बोले भी बाबा की रूहानी नजरें बहुत कुछ कह जाती थी। 'नजर से निहाल किंदा स्वामी सतगुरु' यह बात अवश्य किसी ऐसे व्यक्ति द्वारा कही गई होगी जिसने परमात्मा की जादूभरी नजरों का अनुभव किया होगा। भक्तजन जिसकी पूजा, अर्चना, प्रार्थना करते हैं, वह भगवान उनसे मिलता है जरूर।

ज्योतिर्मय की ज्योति किरण मेरे अन्तस्थल को प्रकाशित कर रही थी और मैं अन्तर्मुख होकर अपना सर्वेक्षण कर रही थी। विचारों की शृंखला टूटी भी नहीं थी कि बाबा ने मेरी ओर मुखातिब होकर पूछा, कहाँ घूम रही थी बच्ची, क्या बाबा से पहली बार मिलने आई हो? मैं मन ही मन मुस्करा कर सोच रही थी, सब कुछ जानते हुए भी बाबा राजयुक्त, युक्तियुक्त बोलकर अपने को छिपा लेते हैं और मैं कहती हूँ, हाँ बाबा, कल्प-कल्प कल्प के संगमयुगे अनगिनत बार आपसे मिल चुकी हूँ। परन्तु, 2500 वर्ष भक्ति करने के बाद आपसे साकार में मिलन होता है। आज आपसे साकार में मिलकर मुख से निकलता है, वाह बाबा, वाह ड्रामा! वाह मेरा भाग्य!

बाबा ने कहा ...

पृष्ठ 27 का शेष भाग

क्या ब्रह्मा जी से मिल सकता हूँ? यह सुनकर वे दो मिनट मौन हो गए फिर बोले, हाँ, आप ब्रह्मा से मिल सकते हो। मैंने पूछा, वो कहाँ हैं? उन्होंने कहा, माउण्ट आबू में होते हैं। मैंने मन में पक्का किया कि आबू जाकर ब्रह्मदेव से अवश्य मिलूँगा। यदि स्वयं ब्रह्मदेव सृष्टि पर हैं तो हम यहाँ क्या कर रहे हैं, हमको तो मिलना ही चाहिए। उन्होंने कहा, एक साल आपको पूरी धारणा करनी पड़ेगी, मुरली प्रतिदिन सुननी पड़ेगी, फिर आप मिल सकते हैं। मैंने कहा, एक साल कैसे इन्तजार कर सकता हूँ, मैं तो अभी ही बाबा से मिलना चाहता हूँ। उसी समय यह विचार भी आया (ज्ञान हो चुका था) कि एक ब्रह्मा देव से मिलने से श्रीकृष्ण की आत्मा, श्री नारायण की आत्मा और उनके तन में विराजमान परमपिता परमात्मा शिव से भी हमारा मिलन हो जाएगा। एक में तीन मिल रहे हैं तो छोड़ना क्यों चाहिए, जाना चाहिए।

ड्रामा प्लैन अनुसार, उसी समय पार्टी के मधुबन जाने की स्वीकृति बाबा की ओर से आई थी। हमारे टीचर बहुत अच्छा वर्णन करते थे कि मधुबन तो स्वर्गाश्रम है। वहाँ का गेट भी स्वर्ग का गेट है। उस पर लिखा है कि पाँच विकारों के वशीभूत कोई भी व्यक्ति अन्दर आ नहीं सकता, ऐसा देवताओं का वह प्रवेश द्वार है। वहाँ स्वयं बाबा रहते हैं। बाबा मधुबन में मुरली चलाते हैं। ऐसा वर्णन सुनकर बड़ा आकर्षण हुआ मधुबन स्वर्गाश्रम में जाने का।

हर पहाड़ी पर दिख रहा था बाबा

चूँकि मुझे ज्ञान में आए 10 दिन ही हुए थे इसलिए पार्टी के अन्य लोग कहने लगे कि यह कैसे मधुबन जा सकता है इतना जल्दी। हमारे निमित्त टीचर ने उनको बताया कि यह विशेष आत्मा है, इसको लेकर ही जाना है। हम आबू रोड पहुँच गए। भूरी दादी को बाबा भेजते थे आबू रोड में पार्टी को रिसीव करने। दादी के कपड़े भी सफेद, बाल भी सफेद तो जैसे एक फरिश्ता बाबा ने भेजा है हमको स्वर्ग ले चलने के लिए, ऐसा अनुभव हुआ। हम जैसे ही बस में बैठे, बस ऊपर पहाड़ पर चढ़ने लगी तो मैंने सोचा, यह टेढ़ा, मेढ़ा कितना सुन्दर रास्ता है स्वर्ग का। हरी-हरी पहाड़ियाँ और हर पहाड़ी पर मुझे बाबा दिख रहा था जैसे कह रहा हो, आओ बच्चे, आओ बच्चे। हम मधुबन (पाण्डव भवन) के गेट पर पहुँचे। सामने ही हमको हमारी सेन्टर की बहनजी मिल गई। कहने लगी, बाबा आप सबको याद कर रहे हैं और बाबा ने कहा है, बच्चों को एरोप्लेन में ले जाना। मैं छोटा था, सोचने लगा, यहाँ एरोप्लेन तो कहीं दिखाई नहीं दे रहा। वास्तव में एरोप्लेन तो बिल्डिंग का नाम था जिसमें हमको ठहरना था।

एरोप्लेन से तैयार होकर हम नीचे आए तो हमारी टीचर बहन ने कहा, बाबा आपको बुला रहे हैं झोपड़ी में, मिलने के लिए। हम झोपड़ी की ओर चल पड़े। दरवाजे से देखा, बाबा अन्दर बैठे थे टांग पर टांग चढ़ाए एकदम सीधी कमर। बाबा का चेहरा एकदम तेजपुँज था और आँखों में रूहानी करंट थी। बाबा का ऐसा रूप देख मैं धन्य-धन्य हो गया कि आज तो साक्षात् ब्रह्मदेव से मिलेंगे।

अलौकिक बाबा के अलौकिक प्रश्न

हमारी पार्टी में हम सात जन थे। बाबा के सामने हम बैठ गए। हमारी टीचर भी बैठी। बाबा ने पूछा, बच्चे, यात्रा कैसी रही? हमने कहा, बाबा बहुत अच्छी रही। फिर बाबा ने पूछा, बच्चे पहली बार आए हो? हमने कहा, हाँ। इतने में हमारी टीचर ने आँख दिखाई। तब हमने कहा, नहीं बाबा, हम पहली बार नहीं आए हैं, पाँच हजार वर्ष पहले भी आए थे, अब भी आए हैं और पाँच हजार वर्ष बाद भी आएँगे। फिर बाबा ने पूछा, अच्छा बच्चे, इसी ड्रेस में आए थे? वो तो हमें सिखाया नहीं गया था। हम अपनी ड्रेस देखने लगे। इतनें में टीचर बहन बोली, बताओ, बताओ, तब हम लोगों ने कहा, हाँ बाबा, इसी ड्रेस में आए थे। हमारी पार्टी के एक भाई को बाबा ने पूछा, बच्चे, आपकी आयु कितनी है? उसने कहा, बाबा, 35 साल। बाबा ने टीचर बहन से कहा, बच्ची, ये 35 साल का तो नहीं लग रहा। टीचर बोली, बाबा, कद छोटा है परन्तु है 35 साल का। बाबा बोले, नहीं, नहीं। तब बहन जी बोली, कहो, एक साल का हूँ। उसने बोला, बाबा, मैं एक साल का हूँ। इस प्रकार बाबा तो बच्चों को अलौकिक दृष्टि से देखते थे।

इसके बाद बाबा ने एक-एक बच्चे को गोद में लिया। पार्टी में मैं सबसे छोटा था। जब मेरी बारी आई मिलने की तो बाबा ने पूछा, बच्चे, आप किससे मिलने आए हो? मैंने कहा, बापदादा से। बाबा ने पूछा, दादा कहाँ है? मैंने कहा, दादा हमारे सामने है। फिर बाबा ने पूछा, शिवबाबा कहाँ है? मैंने झट बाबा की भृकुटि में हाथ रखकर कहा, शिवबाबा यहाँ रहते हैं। दीदी मनमोहिनी पास बैठी थी। वो भी बड़ी खुश हो गई कि यह तो बाबा का पक्का बच्चा निकला।

माया की गोद में मत जाना

फिर बाबा ने मुझे गोद में लिया। अतीन्द्रिय सुख का ऐसा अनुभव हुआ, जो अवर्णनीय है। आत्मा की जन्म-जन्म की प्रभु मिलन की प्यास तृप्त हो गई। बाबा की गोद से निकलने को जी नहीं चाह रहा था। एकदम अशरीरी हो गया। फिर बाबा ने सिर पर हाथ घुमाया और कहा, बच्चे का वर्तमान और भविष्य दोनों महान हैं। फिर कहा, यह विश्वकल्याणकारी आत्मा है। जब बाबा की गोद से बाहर आया तो बाबा ने वचन लिया कि आप बाबा की गोद में आए हो, इसके बाद माया की गोद में मत जाना। ड्रामानुसार बाबा से मिलने के बाद मुझे शादी का कभी संकल्प ही नहीं आया। पवित्रता का व्रत सहज ही धारण हो गया।

बाबा समय के बहुत पाबंद थे। उस समय हिस्ट्री हाल के दरवाजे पर एक चाइनीज घड़ी होती थी। उसमें एक चिड़िया होती थी। मानो चार बजे तो वह बाहर आकर चार बार चूँ-चूँ करती थी। बाबा ठीक छह बजे हिस्ट्री हाल के दरवाजे पर पहुँच जाते थे। ठीक तभी वह घड़ी वाली चिड़िया बाहर निकलकर छह बार चूँ-चूँ करती थी। बाबा हिस्ट्री हाल में संदली पर बैठते थे, कभी कुर्सी का प्रयोग नहीं करते थे।

ब्रह्माभोजन किया बाबा के साथ

हमारी पार्टी में उस समय बहुत मुस्लिम भाई – इस्माइल भाई, कासम भाई आदि भी थे। उन्हें बाबा के प्रति बहुत लगन थी। इस्माइल भाई बाबा पर पूर्ण बलिहार थे। प्रात: दो बजे उठते थे, अपने हाथ से भोजन बनाते थे। बहुत पक्के धारणामूर्त थे। बाबा से मिलकर हम जब बाबा के भण्डारे में गए तो वहाँ भोजन बनाने वाली बहनों की आँखें फैल गई कि ये मुस्लिम भाई भण्डारे में कैसे आ गए। बहनें इनसे और इनकी धारणाओं से भिज्ञ नहीं थी इसलिए उन्होंने आँखें दिखाईं। हम डर गये परन्तु जानीजाननहार बाबा ने हमारी टीचर बहन को बुलाकर उसे आदेश दिया कि कल का ब्रह्माभोजन नारायणगाँव की पार्टी (हम सभी) बनाएगी। वो भागते-भागते हमारे पास आई और यह खुशखबरी सुनाई। अगले दिन दाढ़ी वाले इस्माइल भाई और हम सब लोग लगे ब्रह्माभोजन बनाने। इस्माइल भाई को बाबा ने कहा था, बच्चे, दाढ़ी मत निकालना, आपकी दाढ़ी बहुत सेवा करेगी। ब्रह्माभोजन तैयार करके हम अपने कमरे में आए ही थे कि 12.30 बजे हमारी टीचर बहन फिर आई भागती-भागती और बोली, बाबा आप सबके साथ ब्रह्माभोजन करेंगे। बाबा बीच में बैठे और हम सात लोग बाबा के साथ बैठे ब्रह्माभोजन के लिए। मुझे बाबा का इतना आकर्षण था कि मैं बाबा को ही देखता रहा। बाबा ने कहा, बच्चे, तू भोजन भी करेगा या बाबा की दृष्टि ही लेता रहेगा। फिर बाबा ने गिट्टी बनाई और मेरे मुँह में खिला दी। बाबा का इतना प्यार पाकर बहुत रूहानी नशा चढ़ गया।

मक्खन-मानी खिलाई मुख में

अगले दिन बाबा ने हमें अपनी किचन में बुलवाया। वहाँ देखा कि बाबा छोटी-छोटी रोटियाँ बेल रहे हैं। फिर बाबा ने छोटी रोटी (मानी) को सेंका, उसमें मक्खन और बूरा चीनी लगाकर, एक-एक बच्चे को गोदी में लेकर उसके मुख में खिला दिया। हम धन्य-धन्य हो गए कि इतना प्यार परमात्मा पिता के सिवा और कौन कर सकता है। जब हम जाने लगे तो बाबा ने कहा, बच्चे, हिसाब-किताब चुक्ता हो गया। हमने पूछा, बाबा, कैसा हिसाब? तब बाबा ने कहा, कल बच्चों ने बनाया और बाबा ने खाया और आज बाबा ने बनाया और बच्चों ने खाया, इस प्रकार हिसाब चुक्ता हो गया। इस प्रकार छोटी-छोटी बातों में भी सूक्ष्म हिसाब-किताब का बाबा बहुत ध्यान रखते थे।

इस प्रकार प्रथम मिलन में बाबा ने दिल पर जो छाप लगाई वह अमिट है, संगमयुगी जीवन का बड़े से बड़ा वरदान है। ■■■

ज्ञान के पथ पर चलते हुये अंत तक स्वयं को भटकाव से बचा लेना सबसे बड़ी चतुराई और विशेषता है

1.जोधपुर- ऋषिकुल धाम ट्रस्ट के महामंडलेश्वर स्वामी डॉ.शिवस्वरूपानन्द सरस्वती जी को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु.शील बहन। **2.भीलवाड़ा-** अन्तर्राष्ट्रीय रामस्नेही संप्रदाय के पीठाधीश्वर जगद्गुरु स्वामी श्री रामदयाल जी महाराज से ज्ञान-चर्चा करते हुए ब्र.कु.इन्द्रा बहन तथा ब्र.कु.अनीता बहन। **3.रानी-** एस.डी.एम.बहन सुमित्रा पारिक को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु.सोनू बहन। **4.झुन्झुनू-** जे.जे.टी.यूनिवर्सिटी, झुन्झुनू तथा एज्युकेशन विंग के बीच एम.ओ.यू.साइन होने के बाद समूह चित्र में जे.जे.टी.यू.की प्रो-प्रेजिडेन्ट डॉ.शशि मारोलिया, रजिस्ट्रार डॉ.मधु गुप्ता, डीन डॉ.अंजू सिंह, ब्र.कु. डॉ. पाण्डयामणि भाई तथा अन्य। **5.अजमेर (नवाब का बेड़ा)-** पुष्कर मेले में आध्यात्मिक चित्र प्रदर्शनी का शुभारम्भ करते हुए एस.डी.एम. भ्राता समुंदर सिंह भाटी, ब्र.कु.शान्ता बहन, ब्र.कु.अंकिता बहन, ब्र.कु.रूपा बहन, ब्र.कु.बिरेन्द्र भाई, ब्र.कु.कीर्ति भाई, ब्र.कु.प्रकाश भाई तथा अन्य। **6.भरतपुर-** स्वर्णिम भारत युवा बस यात्रा कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए देवस्थान विभाग के सह-आयुक्त भ्राता कृष्ण कुमार खंडेलवाल, पंडित राम भरोसी, ब्र.कु.कविता बहन, ब्र.कु.शिवानी बहन तथा अन्य। **7.आबू पर्वत (ग्लोबल हॉस्पिटल)-** विश्व मधुमेह दिवस पर आयोजित कार्यक्रम में सम्बोधित करते हुए डॉ.प्रताप मिड्ढ़ा। मंचासीन हैं पुलिस महानिरीक्षक निदेशक भ्राता के.एस.भंडारी, डॉ.श्रीमंत साहू तथा ब्र.कु.बिन्नी बहन। **8.विजयनगर-** आध्यात्मिक स्नेह मिलन कार्यक्रम के पश्चात् नगरपालिका अध्यक्ष भ्राता सचिन जी सांखला, सिंधी समाज संरक्षक भ्राता दौलत माणक चंदानी, पार्षदगण, ब्र.कु.पुष्पा बहन तथा अन्य भाई-बहनें ईश्वरीय स्मृति में। **9.झालावाड़-** विश्व स्मरण दिवस पर सड़क दुर्घटना में पीड़ित व्यक्तियों को श्रद्धांजलि देते हुए जिला परिवहन अधिकारी भ्राता समीर जैन, यातायात निरीक्षक भ्राता शंकर लाल, नगर परिषद् अध्यक्ष भ्राता मनीष शुक्ला तथा ब्र.कु.नेहा बहन।

1.भरतपुर- शिपिंग एवीयेशन टूरिज्म प्रभाग द्वारा आयोजित अभियान 'मेरा देश मेरी शान' के कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए मेयर भ्राता अभिजीत कुमार, अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक भ्राता मूलसिंह राणा, ब्र.कु.कमलेश बहन, ब्र.कु.सन्तोष भाई, ब्र.कु.कविता बहन, अन्तर्राष्ट्रीय वैश्य फैडरेशन के उपाध्यक्ष भ्राता अनुराग गर्ग तथा अन्य। **2.आगरा (शास्त्रीपुरम)-** अखिल भारतीय बस प्रदर्शनी अभियान के यात्रियों का शॉल व माला पहनाकर स्वागत करने के बाद विधायिका बहन हेमलता दिवाकर, मजिस्ट्रेट भ्राता टीकम सिंह कुशवाह, ब्र.कु.मधु बहन, ब्र.कु.सरिता बहन तथा ब्र.कु.शिवानी बहन ईश्वरीय स्मृति में। **3.इगलास-** मधुर मधुमेह शिविर का उद्घाटन करते हुए मंगलायतन विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ.के.वी.एस.एम.कृष्णा, अखिल भारतीय ब्राह्मण सभा के अध्यक्ष भ्राता लक्ष्मीनारायण कौशिक, ब्र.कु.प्रेम बहन, ब्र.कु.हेमलता बहन तथा डॉ.वत्सलन नायर। **4.दिल्ली (पीतमपुरा)-** सेवाकेन्द्र के 30वें वार्षिकोत्सव के उपलक्ष्य में आयोजित कार्यक्रम 'एक शाम प्रभु के नाम' का उद्घाटन करते हुए आई.आर.सी.टी.सी.के उप-महाप्रबन्धक संजय भाई, झूलेलाल मंदिर अध्यक्ष भ्राता चन्दीराम चावला, ब्र.कु.युगरत्न भाई, ब्र.क.प्रभा बहन, ब्र.कु.मंजू बहन तथा अन्य। **5.नई दिल्ली (ईस्ट पटेल नगर)-** 'तनावमुक्त जीवन' विषयक कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए ब्र.कु.उषा बहन, बीकानेर स्वीट्स के मालिक भ्राता नवरतन अग्रवाल, पार्षद भ्राता रमेश जी, ब्र.कु.राजश्री बहन तथा अन्य। **6.हाथरस (वसुन्धरा एन्क्लेव)-** ब्रह्मावत्सों के सम्मान समारोह का उद्घाटन करते हुए ब्र.कु.रामनाथ भाई, ब्र.कु.गोविन्द भाई, ब्र.कु.शीला बहन, ब्र.कु.मधु बहन तथा ब्र.कु.रानी बहन। **7.बरेली (सिविल लाइन्स)-** चार बहनों के ईश्वरीय समर्पण समारोह में केक काटते हुए ब्र.कु.मनोरमा बहन, ब्र.कु.पार्वती बहन, मेनेजमेंट कालेज के अध्यक्ष, कोकाकोला कं.के भ्राता लाधानी जी तथा अन्य। **8.आगरा (म्यूजियम)-** शिपिंग एवीयेशन टूरिज्म प्रभाग द्वारा आयोजित अभियान 'मेरा देश मेरी शान' के कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए भ्राता अरुण डंग, टूरिस्ट गिल्ड के पूर्व अध्यक्ष, भ्राता राजीव सक्सेना, उपाध्यक्ष, टूरिज्म गिल्ड, ताजमहल कमान्डर भ्राता बृजभूषण, ब्र.कु.शीला बहन, ब्र.कु.कमलेश बहन, ब्र.कु.सन्तोष भाई तथा अन्य।

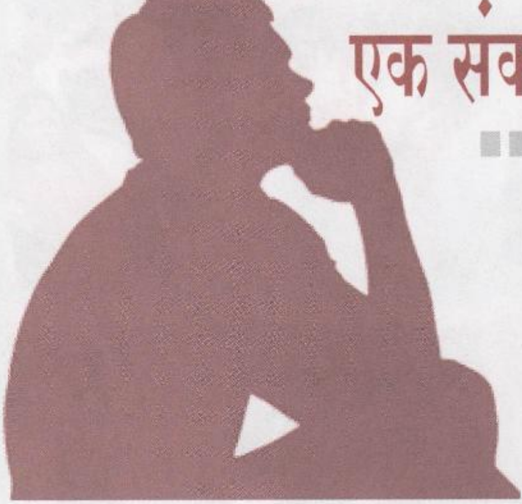

एक संकल्प बदल सकता है जिंदगी

ब्रह्माकुमार रामभूल, करनाल (हरियाणा)

एक व्यसनाधीन व्यक्ति को जब मैंने ईश्वरीय ज्ञान सुनाया और जीवन में बदलाव के बारे में चर्चा की तो उसने कहा, इतनी जल्दी जीवन थोड़े ही बदल सकता है? जन्म-जन्म के बुरे संस्कार हमारे अन्दर भरे हुए हैं, उन्हें बदलने में बहुत समय लगेगा। बात उसकी ठीक थी लेकिन कभी-कभी जिंदगी को बदलने के लिए सिर्फ एक विचार ही काफी होता हैजैसे कि मिट्टी की जिन्दगी बदल गई कुम्हार का एक विचार बदलने से।

किसी गाँव में एक कुम्हार मिट्टी के बर्तन बनाया करता था। एक सुबह उसने बर्तन बनाने के लिए चाक के ऊपर मिट्टी रखी, चाक चलाया और फिर एकदम रोक दिया। मिट्टी बोली, कुम्हार,क्यों रुक गया (मिट्टी बोलती नहीं है पर यह कहानी है शिक्षा के लिए)? कुम्हार बोला, मेरा विचार बदल गया। पहले मेरा विचार था कि मैं चिलम बनाऊँगा। अब मेरा विचार है कि मैं घड़ा बनाऊँगा। मिट्टी कहती है, कुम्हार, तेरा तो विचार बदल गया पर मेरा तो जीवन ही बदल गया। कुम्हार पूछता है, कैसे? मिट्टी कहती है, कुम्हार, अगर तू मुझे चिलम बनाता तो मैं खुद भी आग में तपती और पीने वाले को भी तपाती। अब तू मुझे घड़ा बनायेगा तो मैं खुद भी शीतल रहूँगी और दूसरों को भी ठण्डक पहुँचाऊँगी। इस पूरे दृष्टान्त में एक विचार बदलने का ही सारा खेल है। किसी ने कहा है, एक मिनट में जिंदगी नहीं बदली जा सकती। दूसरे ने जवाब दिया, एक मिनट तो छोड़ो, एक सेकण्ड में लिया गया दृढ़ फैसला जिंदगी बदल देता है।

किसी तालाब में एक छोटी-सी भी वस्तु फेंकने से उसका वृत्त कहाँ तक जाता है, हम समझ सकते हैं। अगर माइक्रोस्कोप से देखेंगे तो पता पड़ेगा कि कितनी बड़ी जगह पर उसका असर होता है। यही हाल हर एक संकल्प का है। संकल्प=(सं + कल्प) अर्थात् एक संकल्प का असर आत्मा पर पूरा कल्प चलता है। संकल्प को हम बिना मतलब ही खर्च कर देते हैं परन्तु नहीं। जितनी इनकी बचत करेंगे उतने ही हम श्रेष्ठ और शक्तिशाली बनते जायेंगे। ■■■

सदस्यता शुल्क :

(भारत) वार्षिक: 100 /- आजीवन : 2,000 /-
(विदेश) वार्षिक - 1,000/- आजीवन - 10,000/-

शुल्क ड्राफ्ट या ई-मनीऑर्डर द्वारा भेजने हेतु पता :

'ज्ञानामृत', ज्ञानामृत भवन, शान्तिवन- 307510
(आबू रोड) राजस्थान, भारत।

For Online Subscription: **Bank**: State Bank of India, **A/c Holder Name :** Gyanamrit, **A/c No:** 30297656367
Branch Name : PBKIVV, Shantivan, IFSC Code: SBIN0010638

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क सूत्र :
Mobile: 09414006904, 09414423949, **Email:** hindigyanamrit@gmail.com, **omshantipress@bkivv.org**

ब्र.कु. आत्मप्रकाश, मुख्य सम्पादक एवं प्रकाशक, ज्ञानामृत भवन, शान्तिवन, आबूरोड द्वारा सम्पादन तथा ओमशान्ति प्रिन्टिंग प्रेस, शान्तिवन-307510, आबूरोड में प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के लिए छपवाया।
मुख्य सम्पादक - ब्र.कु. आत्मप्रकाश, **सम्पादक** - ब्र.कु. उर्मिला, शान्तिवन

फोटो, लेख, कविता या अन्य प्रकाशन सामग्री के लिये :
E-mail : gyanamritpatrika@bkivv.org, omshantiprintingpress@gmail.com, Website: gyanamrit.bkinfo.in

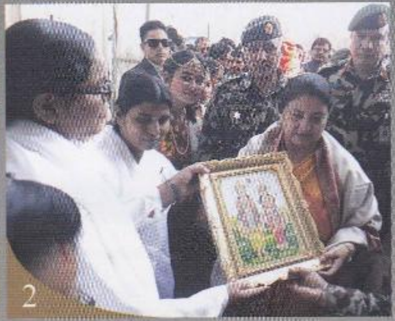

1.विशाखापट्टनम (ओल्ड गाजुवाका)- दिव्य ज्योति भवन की उद्घाटन पट्टिका का अनावरण करते हुए राजयोगिनी दादी इशू जी। साथ में ब्र.कु.कविता बहन तथा अन्य। **2.जनकपुर**- नेपाल की महामहिम राष्ट्रपति बहन विद्या देवी भण्डारी को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु.सरिता बहन तथा ब्र.कु.गुलाब बहन। **3.करनाल (सेक्टर-7)**- हरियाणा के मुख्यमंत्री भ्राता मनोहर लाल खट्टर को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु.प्रेम बहन तथा ब्र.कु.शिखा बहन। **4.एडिसन (न्यू जर्सी)**- मेयर थॉमस लांके को ईश्वरीय सन्देश देने के बाद समूह चित्र में हैं ब्र.कु.अमीरचंद भाई, ब्र.कु.रामप्रकाश भाई तथा ब्र.कु.शीतल बहन। **5.मुम्बई (बोरिवली)**- 'बींग स्टेबल इन चेलेंजिंग टाइम्स' विषयक कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए अभिनेत्री बहन शशी शर्मा, हॉस्पिटल के निदेशक डॉ.भ्राता पी.नाडकर्णी, ब्र.कु.शिवानी बहन, ब्र.कु.दिव्या बहन, सांसद भ्राता गोपाल शेट्टी, संगीत निदेशक भ्राता रामशंकर तथा अन्य। **6.राउरकेला**- 'गॉडस् पावर फॉर गोल्डन एज' विषयक कार्यक्रम में मंचासीन हैं एस.ई.एफ.आई.के महासचिव भ्राता विमल बी.सी., आई.एफ.एस.भ्राता लिंगराज होटा, उड़ीसा के यातायात मन्त्री भ्राता पदमनाभ बेहरा, ब्र.कु.उषा बहन तथा ब्र.कु.विमला बहन। **7.अहमदाबाद (लोटस हाउस)**- 'जीवन का आधार गीता का सार' विषयक कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए गुजरात उच्च न्यायालय के न्यायाधीश भ्राता जी.आर.उपाध्याय, सेवानिवृत्त आई.ए.एस.डॉ.एस.त्रिपाठी, विधायक भ्राता बलराम थवानी, ब्र.कु.उषा बहन तथा ब्र.कु.शारदा बहन। **8. मैसूर**- शिपिंग अविएशन, टूरिज्म प्रभाग के 'मेरा देश मेरी शान' विषयक अभियान कार्यक्रम के बाद समूह चित्र में हैं ब्र.कु.कमलेश बहन, ब्र.कु.सन्तोष भाई, ब्र.कु.लक्ष्मी बहन, कीर्ति टूअर्स तथा ट्रावेल के भ्राता ए.सी.रवि, ए.ए.आई.के निदेशक भ्राता मंजूनाथ, होटल सह-प्रबन्धक बहन गार्गी तथा अन्य। **9.झोझूकलाँ**- तिवाला गाँव में आयोजित 'बेटी बचाओ, सशक्त बनाओ' कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए ब्र.कु.उर्मिला बहन, हरियाणा के पशुधन विकास बोर्ड के चेयरमैन भ्राता सोमवीर सांगवान, ब्र.कु.वसुधा बहन तथा अन्य।

RNI No.10563/1965, Postal Regd. No.RJ/SRO/9559/2018-2020 Posting at Shantivan-307510 (Abu Road) Licensed to post without prepayment No. RJ/WR/WPP/002/2018-2020. Published on 20th of each Month & Posted on 26th to 1st of each month. Price 1 copy Rs. 8.50, Issue : January, 2020.

1.शान्तिवन (आबू रोड)-भारत के महामहिम राष्ट्रपति भ्राता रामनाथ कोविंद जी के ब्रह्माकुमारीज़ के मुख्यालय आगमन पर उनको तथा प्रथम महिला श्रीमती सविता कोविंद को आशीर्वाद देती हुई संस्था की मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी जानकी जी, (नीचे) 'महिला सशक्तिकरण द्वारा सामाजिक परिवर्तन' विषयक राष्ट्रीय सम्मेलन का उद्घाटन करते हुए भारत के महामहिम राष्ट्रपति भ्राता रामनाथ कोविंद, राजस्थान के राज्यपाल भ्राता कलराज मिश्र, राजयोगिनी दादी जानकी जी, ऊर्जा संरक्षण मंत्री भ्राता बी.डी.कल्ला तथा अन्य।

If undelivered please return to GYANAMRIT BHAWAN, Shantivan-307510, Abu Road,Dist.- Sirohi (Rajasthan)